लखनऊ

शनिवार, 6 जून, 2026

वर्ष : 11 | अंक: 280

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ एक ही पासवर्ड है, भरोसा।

TODAY WEATHER

DAY 42° Hi

NIGHT 29° Low

संक्षेप

भाजपा ने उम्मीदवारों की सूची जारी की, तरुण चुघ सहित कई बड़े नाम शामिल

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव 2026 और ओडिशा में होने वाले राज्यसभा उपचुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान कर दिया है। पार्टी की केंद्रीय चुनाव समिति ने विभिन्न राज्यों से उम्मीदवारों के चयन को मंजूरी दे दी है। इस सूची में कई अनुभवी नेताओं और नए चेहरों को मौका दिया गया है। भाजपा द्वारा जारी सूची के अनुसार, अरुणाचल प्रदेश से ताई तागाक को राज्यसभा उम्मीदवार बनाया गया है। गुजरात से पार्टी ने चार उम्मीदवारों पर भरोसा जताया है। इनमें राजुभाई शुक्ला, मुकेशभाई राठवा, मानसिंह परमार और जीतेंद्र मेघजीभाई कंजारिया के नाम शामिल हैं। वहीं, मध्य प्रदेश से भाजपा ने राष्ट्रीय स्तर के नेता तरुण चुघ और रजनीश अग्रवाल को राज्यसभा चुनाव के लिए उम्मीदवार बनाया है। तरुण चुघ का नाम सामने आने के बाद राजनीतिक हलकों में इसकी खास चर्चा हो रही है। चरुण चुघ भाजपा के महासचिव हैं। मणिपुर से पार्टी ने ए. शारदा देवी को उम्मीदवार घोषित किया है। पूर्वोत्तर राज्यों में संगठन को और मजबूत करने की रणनीति के तहत यह फैसला महत्वपूर्ण माना जा रहा है। राजस्थान से भाजपा ने दो प्रमुख नेताओं को राज्यसभा भेजने का फैसला किया है। पार्टी ने डॉ. अलका गुर्जर और डॉ. सतीश पूनिया के नामों पर मुहर लगाई है। डॉ. सतीश पूनिया लंबे समय से राजस्थान की राजनीति में सक्रिय और प्रभावशाली चेहरा रहे हैं।

"गंधर्व विवाह" के नाम पर बहकाता था आईआईटी बाबा, लड़कियों को प्रसाद में नशीला पदार्थ देकर करता था दुष्कर्म

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश की धार्मिक नगरी मथुरा से सामने आया एक सनसनीखेज मामला पूरे देश में चर्चा का विषय बन गया है। धर्म, आस्था और अध्यात्म की आड़ में युवतियों का यौन शोषण करने वाले एक स्वयंभू गुरु आईआईटी बाबा को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान ओडिशा निवासी 29 वर्षीय अभिषेक मिश्रा के रूप में हुई है, जो खुद को "आदिकर्ता नारायण दास" बताकर धार्मिक प्रवचन करता था। पुलिस के अनुसार आरोपी ने न केवल महिलाओं का मानसिक और शारीरिक शोषण किया, बल्कि आपत्तिजनक तस्वीरों और वीडियो के जरिये उन्हें तथा उनके परिवारों को ब्लैकमेल भी किया। अभिषेक मिश्रा ने वर्ष 2017 से 2021 के बीच आईआईटी रुडकी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी। उच्च शिक्षा प्राप्त होने के बावजूद उसने आध्यात्मिक गुरु का चोला पहन लिया और मथुरा के राधाकुंज इलाके में पिछले लगभग चार वर्षों से रह रहा था। यहां वह खुद को कथावाचक और धार्मिक गुरु के रूप में प्रस्तुत करता था। युवाओं और महिलाओं के बीच प्रभाव बढ़ाने के लिए उसने "राधा कृपा अमृत" नाम से एक यूट्यूब चैनल भी बनाया था, जहां वह हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रवचन देता था। इसके अलावा उसने अपने फर्जी नाम से सोशल मीडिया पर पेशेवर पहचान भी बना रखी थी। पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी इन मंचों का उपयोग केवल धार्मिक प्रचार के लिए नहीं, बल्कि युवतियों को अपने जाल में फंसाने के

यूपी में सरकारी वकीलों की फीस 50% बढ़ी, अधिवक्ताओं ने सीएम योगी का जताया आभार

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। यूपी सरकार द्वारा विभिन्न न्यायालयों में राज्य सरकार की ओर से पैरवी करने वाले शासकीय अधिवक्ताओं की रिटेनरशिप एवं बहस फीस में वृद्धि किए जाने के निर्णय का अधिवक्ता समुदाय ने स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया है। राज्य के महाधिवक्ताओं ने इसे ऐतिहासिक निर्णय बताया है।

अधिवक्ताओं ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने न्यायालयों में राज्य के हितों की प्रभावी पैरवी सुनिश्चित करने की आवश्यकता को समझते हुए इस विषय पर पहल की और अब उनके नेतृत्व में प्रदेश मंत्रिमंडल ने रिटेनरशिप एवं बहस फीस में ऐतिहासिक वृद्धि का निर्णय लेकर अधिवक्ता समुदाय की लंबे समय से चली आ रही अपेक्षा को पूरा किया है। यह निर्णय केवल फीस वृद्धि का विषय नहीं है, बल्कि न्यायिक व्यवस्था को अधिक सक्षम और उत्तरदायी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे न्यायालयों में राज्य सरकार के मामलों की गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध पैरवी को और बल मिलेगा।

इन अदालतों में सरकार का पक्ष रखते हैं सरकारी वकील

अधिवक्ताओं ने कहा कि जनपद न्यायालयों में कार्यरत जिला शासकीय अधिवक्ता, अपर जिला शासकीय अधिवक्ता, सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता, उप जिला शासकीय अधिवक्ता, नामित अधिवक्ता, विशेष अधिवक्ता एवं न्याय मित्रों से लेकर हाई कोर्ट इलाहाबाद, हाई कोर्ट की लखनऊ खंडपीठ और सुप्रीम कोर्ट में राज्य का पक्ष रखने वाले महाधिवक्ता, अपर महाधिवक्ता, मुख्य स्थायी अधिवक्ता, स्थायी अधिवक्ता, शासकीय अधिवक्ता, ब्रीफ होल्डर, एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड और विभिन्न श्रेणी के पैनल अधिवक्ताओं तक इस निर्णय का व्यापक लाभ पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि बदलते न्यायिक परिदृश्य, मुकदमों की बढ़ती संख्या, जटिल विधिक विषयों तथा अधिवक्ताओं की बढ़ी जिम्मेदारियों को देखते हुए पारिश्रमिक संरचना के पुनरीक्षण की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। विशेष रूप से जनपद न्यायालयों के अधिवक्ताओं की फीस में लगभग 10 वर्ष तथा महाधिवक्ता स्तर पर लगभग 14 वर्ष बाद संशोधन किया जाना प्रदेश सरकार की संवेदनशीलता और दूरदर्शिता को दर्शाता है।

सरकार ने बढ़ाई 50 प्रतिशत फीस

अधिवक्ताओं ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा समयानुकूल पुनरीक्षण की अवधारणा को स्वीकार करते हुए रिटेनरशिप एवं प्रति सुनवाई फीस में 50 प्रतिशत तक की वृद्धि का निर्णय लिया गया है। इससे अधिवक्ताओं का मनोबल बढ़ेगा, राज्य के महत्वपूर्ण मामलों की पैरवी और अधिक प्रभावी होगी तथा न्यायालयों में शासन का पक्ष पूरी मजबूती के साथ प्रस्तुत किया जा सकेगा।

खरगे ने राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल किया

बेंगलुरु, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शुक्रवार को कर्नाटक से राज्यसभा चुनाव के लिए पार्टी उम्मीदवार के रूप में नामांकन पत्र दाखिल किया। 'विधान सौध' में उनके नामांकन दाखिल करने के अवसर पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, कर्नाटक के मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार, पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धरमैया, कांग्रेस महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला और के सी वेणुगोपाल तथा राज्य सरकार के कई मंत्री मौजूद थे। अधिकारियों ने बताया कि नामांकन पत्र विधानसभा सचिव एम के विशालाक्षी को सौंपे गए। खरगे वर्तमान में राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं और संसद के उच्च सदन में उनका कार्यकाल 25 जून को समाप्त हो रहा है। पार्टी ने कर्नाटक से राज्यसभा चुनाव के लिए खरगे के अलावा पवन खेड़ा और मंसूर अली खान को मैदान में उतारा है। खेड़ा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख हैं।

खान वर्तमान में कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव हैं। उन्होंने 2024 का लोकसभा चुनाव बेंगलुरु सेंट्रल निर्वाचन क्षेत्र से लड़ा था, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। कांग्रेस सूत्रों ने बताया कि दोनों खेड़ा और खान बाद में नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि आठ जून है।

'जब तक आतंकवाद खत्म नहीं होगा तब तक पाकिस्तान को नहीं मिलेगा पानी'

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत ने सिंधु जल समझौते को लेकर पाकिस्तान के बयान पर करारा पलटवार किया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने साप्ताहिक ब्रीफिंग में साफ किया कि आतंकवाद खत्म होने तक यह संधि स्थगित रहेगी। इसके साथ ही कश्मीर दौरे पर स्विस राजदूत को लेकर पाकिस्तान की आपत्ति को खारिज कर दिया गया। भारत ने कहा कि जम्मू-कश्मीर हमारा अभिन्न हिस्सा है। ब्रीफिंग में भारत और अमेरिका के बीच अंतरिम ट्रेड डील पर भी सकारात्मक अपडेट दिया गया। नेपाल के विदेश मंत्री जल्द ही भारतीय विदेश मंत्री से मुलाकात करेंगे। इसके अलावा बांग्लादेशी प्रवासियों के मुद्दे पर कानून के तहत कार्रवाई की बात कही गई। मालवीय नगर हादसे में 13 विदेशी नागरिकों की मौत पर गहरा दुख जताया गया है। विदेश मंत्रालय प्रभावित देशों के दूतावासों के लगातार संपर्क में है।

भारत ने सिंधु जल संधि (IWT) पर पाकिस्तान के हालिया बयान को खारिज कर दिया है। रणधीर जायसवाल ने कहा, 'जब तक पाकिस्तान आतंकवाद को खत्म नहीं करेगा तब तक सिंधु जल संधि स्थगित रहेगी'। भारत अपने इस फैसले पर पूरी तरह अडिग है। इसके साथ ही भारत और अमेरिका के बीच अंतरिम ट्रेड डील को लेकर भी चर्चा तेज हो गई है। हाल ही में एक अमेरिकी व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल भारत आया था। कॉमर्स मंत्रालय की तरफ से इस बातचीत को लेकर प्रेस रिलीज जारी की गई है। दोनों देशों के बीच यह बातचीत काफी सकारात्मक रही है। आने वाले दिनों में इस डील को पूरा करने के लिए और चर्चा होगी। दोनों ही पक्ष व्यापारिक रिश्तों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

घुसपैठियों पर नकेल की तैयारी, बंगाल, बिहार और त्रिपुरा को लेकर अमित शाह का बड़ा ऐलान

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को देश के सीमावर्ती राज्यों को लेकर बड़ी चेतावनी दी। उन्होंने साफ-साफ शब्दों में घुसपैठियों को भारत में घुसने से पहले सख्त चेतावनी दी। शाह ने कहा कि केंद्र सरकार पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और बिहार में जनसांख्यिकीय बदलाव बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेगी। सरकार देश की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा में आने वाली कमियों को दूर करने के लिए पूरे प्रयास कर रही है।

त्रिपुरा के लंकामुरा बॉर्डर आउटपोस्ट पर बीएसएफ जवानों को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा, "पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और बिहार में जनसांख्यिकीय बदलाव सहन नहीं किए जाएंगे। केंद्र सरकार अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा में मौजूद खामियों को भरने के लिए हर संभव कदम उठा रही है।"

गृह मंत्री ने बताया कि सरकार का महत्वाकांक्षी 'स्मार्ट बॉर्डर' प्रोजेक्ट अंतिम चरण में है। इस परियोजना को देश के 7-8 जगहों पर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया जाएगा। शाह ने कहा कि नई सुरक्षा व्यवस्था में अत्याधुनिक तकनीक, स्थानीय प्रशासन और सीमा पर तैनात सैनिकों को एक साथ जोड़ा जाएगा। इससे सीमा सुरक्षा और अधिक मजबूत और प्रभावी बनेगी।

उन्होंने बीएसएफ जवानों की तारीफ करते हुए कहा कि हमारे जांबाज देश की सीमाओं की रक्षा में दिन-रात लगे रहते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि सीमा पर घुसपैठ और अवैध गतिविधियों को पूरी तरह रोकने के लिए तकनीकी रूप से बेहतर निगरानी व्यवस्था विकसित की जा रही है।

स्मार्ट बॉर्डर परियोजना के तहत ड्रोन, सेंसर, एआई आधारित निगरानी, हाई-रेजोल्यूशन कैमरे और अन्य आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया जाएगा। इससे सीमा पर तैनात बलों को बेहतर सहायता मिल सकेगी और घुसपैठ की कोशिशों को पहले ही नाकाम किया जा सकेगा। अमित शाह की यह घोषणा उन राज्यों के संदर्भ में महत्वपूर्ण मानी जा रही है जहां अवैध घुसपैठ और जनसांख्यिकीय संतुलन बिगड़ने की शिकायतें लंबे समय से की जा रही हैं।

मणिपुर में संदिग्ध उग्रवादियों ने घर में सो रहे तीन लोगों को मार डाला, 7 घरों में लगाई आग

लंबे समय से चल रहे जातीय संघर्ष के बीच नई हिंसा

यह घटना मणिपुर में तीन साल से अधिक समय से चल रहे जातीय तनाव और हिंसा की पृष्ठभूमि में हुई है। यह संघर्ष मई 2023 में मैतेई समुदाय की अनुसूचित जनजाति (ST) दर्जे की मांग को लेकर हुए विरोध-प्रदर्शनों के बाद मैतेई और कुकी-जो समुदायों के बीच झड़पों के साथ शुरू हुआ था। हिंसा तेज़ी से पूरे राज्य में फैल गई, जिससे बड़े पैमाने पर हत्याएं, आगज़नी और लोगों का विस्थापन हुआ। एक अनुमान के अनुसार, मई 2023 में अशांति शुरू होने के बाद से 250 से ज़्यादा लोग मारे गए हैं और लगभग 60,000 लोग विस्थापित हुए हैं। दोनों समुदायों के बहुत से लोग अभी भी राहत शिविरों में रह रहे हैं, जबकि कई ज़िले जातीय आधार पर बंटे हुए हैं।

इंफाल। मणिपुर के कांगपोकपी जिले के लोइबोल खुलेन गांव में शुक्रवार को संदिग्ध उग्रवादियों के हमले में तीन लोगों की मौत हो गई और सात घर जलकर राख हो गए। कुकी का प्रतिनिधित्व करने वाली मुख्य संस्था KIM के अनुसार, NSCN-IM और उसके सहयोगी संगठन ZUF (K) के भारी हथियारों से लैस सदस्यों ने सुबह करीब 4 बजे गांव पर हमला किया। संगठन ने कहा कि इस हमले में तीन आम नागरिकों की मौत हो गई, सात घर नष्ट हो गए और नागरिकों की संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचा।

मृतकों की पहचान लेतखोंगम हाओकिप, उनकी पत्नी टिनमेरी हाओकिप और जांगमिनलाल हाओकिप के रूप में हुई है। ये सभी लोइबोल खुलेन के निवासी थे। घटना की निंदा करते हुए KIM ने इस हमले को निहत्थे नागरिकों के खिलाफ ₹हिंसा का बर्बर कृत्य₹ बताया और कहा कि निर्दोष लोगों की जानबूझकर हत्या और घरों को नष्ट करना मानवीय गरिमा और मौलिक मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन है। इसके अलावा, KSO साउथ वेस्ट सदर हिल्स ने आरोप लगाया कि VBIG, ZUF-कामसन और NSCN (IM) से जुड़े उग्रवादी हमले में शामिल थे और नागा विद्रोही समूहों पर कूकी लोगों के पुश्तैनी इलाकों को निशाना बनाने का आरोप लगाया।

ममता को 'सिर्फ सलाहकार' बनाने के प्रस्ताव पर बवाल

टीएमसी के बागी खेमे में फूट के संकेत, आपस में भिड़े विधायक

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल की राजनीति में तृणमूल कांग्रेस (ज्जरूष्ट) के भीतर जारी सियासी घमासान अब नए मोड़ पर पहुंचता दिख रहा है। पार्टी में बगावत के बाद बने खेमे में ही मतभेद के संकेत सामने आने लगे हैं। ममता बनर्जी की भूमिका को लेकर बागी विधायकों के बीच असहमति उभरने लगी है, जिससे गुट के भीतर फूट की आशंका बढ़ गई है।

बागी खेमे के कई विधायकों ने स्पष्ट किया है कि उनके लिए ममता बनर्जी ही पार्टी की सर्वोच्च नेता हैं। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि उन्हें केवल एक सलाहकार की भूमिका तक सीमित करने की कोशिश की गई तो वे इस गुट से अलग होने पर विचार कर सकते हैं। विवाद की शुरुआत बागी विधायक दल के नेता ऋतब्रत बनर्जी के उस प्रस्ताव से हुई, जिसमें उन्होंने सुझाव दिया था कि ममता बनर्जी विधायक दल की मुख्य सलाहकार की भूमिका निभा सकती हैं। गुरुवार को हुई बैठक में रखे गए इस प्रस्ताव पर कई विधायकों ने आपत्ति जताई। उनका कहना था कि ममता बनर्जी का कद और पार्टी के लिए उनका योगदान उन्हें केवल सलाहकार की भूमिका तक सीमित करने की अनुमति नहीं देता। पांचला विधानसभा क्षेत्र से विधायक गुलशन मल्लिक ने बैठक के बाद समाचार एजेंसी पीटीआई से बातचीत में कहा, हमें बताया गया था कि पार्टी ममता बनर्जी के नेतृत्व में आगे बढ़ेगी। वह केवल सलाहकार नहीं हैं। हम चाहते हैं कि पार्टी उनके सक्रिय नेतृत्व में ही काम करे। यदि उन्हें सर्वोच्च नेता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है तो हमें अपने भविष्य को लेकर गंभीरता से विचार करना होगा। इसी तरह सिताई से विधायक संगीता रॉय बसुनिया ने भी कहा कि ममता बनर्जी उनकी सर्वोच्च नेता हैं और हमेशा रहेंगी।

'मानवता और न्याय के सामने एआई सबसे बड़ी कानूनी चुनौती', सीजेआई बोले- इस दशक के फैसले तय करेंगे भविष्य

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने एआई को लेकर बड़ी बात कही है। उन्होंने कहा कि एआई अब केवल एक कल्पनात्मक तकनीक नहीं, बल्कि एक वास्तविकता बन चुकी है और यह अंतरराष्ट्रीय कानून के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। उन्होंने चेतावनी दी कि इस दशक में लिए जाने वाले निर्णय तकनीक, शक्ति, स्वतंत्रता और न्याय के बीच भविष्य के संबंधों को निर्धारित करेंगे।

ब्रिटेन के बर्कबेक, लंदन विश्वविद्यालय में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड इंटरनेशनल लॉ' विषय पर आयोजित सार्वजनिक व्याख्यान में सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि तकनीक न तो स्वभाव से अच्छी होती है और न ही बुरी। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि समाज उसे किस कानूनी, राजनीतिक और नैतिक ढांचे के भीतर उपयोग करता है। कानून की जिम्मेदारी तकनीकी प्रगति का विरोध करना या उसके सामने बिना सवाल झुक जाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि तकनीकी शक्ति संवैधानिक मूल्यों, लोकतांत्रिक वैधता और मानवीय गरिमा के प्रति जवाबदेह बनी रहे।

एआई किसे और कैसे दे रही चुनौती?

उन्होंने यह भी कहा कि पारंपरिक अंतरराष्ट्रीय कानून क्षेत्रीय सीमाओं पर आधारित रहा है, लेकिन एआई इन अवधारणाओं को चुनौती देता है। एआई मॉडल कई देशों के डेटा पर प्रशिक्षित होते हैं, अलग-अलग देशों में स्थित कंप्यूटिंग संसाधनों का उपयोग करते हैं और दुनिया के किसी भी हिस्से में लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या संप्रभुता, मानवाधिकार और जवाबदेही जैसे अंतरराष्ट्रीय कानून के मौजूदा सिद्धांत इस नई तकनीकी शक्ति को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त हैं या फिर नई कानूनी सोच की जरूरत पड़ेगी।

एआई का भविष्य कैसे तय होगा?

अपने संबोधन के अंत में CJI सूर्यकांत ने कहा कि एआई का भविष्य केवल तकनीकी नवाचार से नहीं, बल्कि मानवता द्वारा किए जाने वाले कानूनी और नैतिक विकल्पों से तय होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि सबसे बड़ी चुनौती तकनीकी क्षमता को नियंत्रित करना नहीं, बल्कि ऐसे माहौल में कानूनी जवाबदेही को बनाए रखना है जहां निर्णय लेने की प्रक्रिया तेजी से एल्गोरिदम के माध्यम से संचालित हो रही है। अगर जवाबदेही बिखर गई, तो न्याय और उत्तरदायित्व की अवधारणा ही कमजोर पड़ सकती है।

एआई कैसे सभी क्षेत्रों को कर रहा प्रभावित?

उन्होंने कहा कि एआई शासन, व्यापार, युद्ध, संचार, सार्वजनिक प्रशासन और यहां तक कि न्यायिक एवं संप्रभु शक्तियों के इस्तेमाल को भी तेजी से प्रभावित कर रहा है। सरकारें अब कल्याणकारी योजनाओं के आवंटन, आव्रजन आवेदनों के मूल्यांकन, सीमा निगरानी, वित्तीय नियमन और पुलिसिंग जैसे कार्यों में एल्गोरिदमिक प्रणालियों का उपयोग कर रही हैं। वहीं सेनाएं स्वायत्त सैन्य क्षमताओं का विकास कर रही हैं और अदालतें एआई से जुड़े साक्ष्यों, स्वचालित निर्णयों तथा डिजिटल न्यायिक प्रक्रिया जैसे सवालों से जूझ रही हैं।

एआई न्यायिक व्यवस्था के लिए कैसे अवसर है?

सीजेआई ने कहा कि एआई न्यायिक व्यवस्था के लिए एक अवसर भी है। यदि इसका जिम्मेदारीपूर्वक और मानवीय निगरानी में उपयोग किया जाए तो यह कानूनी शोध, केस प्रबंधन, अनुवाद, ट्रांसक्रिप्शन, दस्तावेजों के वर्गीकरण और न्यायिक मिसालों की पहचान जैसे कार्यों में मदद कर सकता है। इससे मामलों के निपटारे में तेजी आएगी और न्याय तक लोगों की पहुंच बेहतर होगी।

वाराणसी में सीएम का जन्मदिन मनाकर पर्यावरण संरक्षण का काशीवासियों ने दिया संदेश, 54 किलो का लड्डू केक भी काटा

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। भारतीय जनता पार्टी ने पार्टी के आह्वान पर पूरे पखवारे चलने वाले कार्यक्रम की शुरुआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का जन्मदिन मनाने से किया। इस दौरान बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पार्टी के महानगर कार्यालय सिगरा पर इकट्ठा हुए। सभी ने योगी के चित्र पर मिष्ठान प्रस्तुत कर उसे लोगों को बांट कर मुंह मीठा किया। इसके बाद पौधरोपण का कार्यक्रम हुआ।

इस क्रम में पूरे पखवारे भर कार्यक्रम होगा। मोदी सरकार के 12 वर्ष पूरे होने पर सेवा, संस्कार, सुशासन एवं सम्मान के कार्य होंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासन को सात जून को 12 वर्ष पूर्ण हो रहा है। इस दौरान देश में उपलब्धियों और बदलाव की नई इबारत लिखी गई।

केंद्र व राज्य सरकार की नीतियों, योजनाओं व कार्यक्रमों की उपलब्धियों तथा जनसामान्य के जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन को प्रदर्शित करने के लिए पूरे पखवारे भर समेकित अभियान चलाया जाएगा। कार्यक्रम सेवा, संस्कार, सुशासन एवं सम्मान के मूल भाव के अनुरूप होगा। इस क्रम में आठ जून को मंत्री, जनप्रतिनिधि व अधिकारी प्रबुद्ध वर्ग और आम आदमी से संपर्क करेंगे।

14 जून को सभी विकास खंडों में त्रिदिवसीय जनकल्याण मेलों में सभी विभागों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। 16 जून को विकसित भारत संकल्प सम्मेलन, 17 जून से 20 जून तक पहले और अब विकास प्रदर्शनी लगेगी। इसमें विशेष रूप से श्रीराम जन्मभूमि, श्री काशी विश्वनाथ, महाकुंभ व अन्य पुनर्जीवित तीर्थ स्थलों एवं दार्शनिक केंद्र, इंफ्रास्ट्रक्चर, औद्योगिक परियोजनाएं, सुरक्षा माडल, विकसित उत्तर प्रदेश को प्रदर्शित किया जाएगा।

पार्टी की ओर से बताया गया कि 18 व 19 जून को गौ-आधारित, प्राकृतिक व प्रगतिशील खेती पर कार्यशाला आदि होगा। 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विविध कार्यक्रम होंगे। इस अभियान अवधि में रात्रि चौपाल भी होगा। इस माह पार्टी की ओर से कई प्रमुख आयोजन प्रस्तावति हैं। इसके लिए पार्टी के स्तर पर तैयारियां भी चल रही हैं।

54 किलो का लड्डू केक काटा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का 54वां जन्मदिन काशी में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। 51 फुट ऊंचे वरद अंजनेय हनुमान मंदिर में आयोजित विशेष कार्यक्रम में गया और 54 पौधे समर्पित किए गए। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ता और पदाधकिारी भी मौजूद रहे।

चिकित्सा इकाइयों पर आठ जून तक ओआरएस कार्नर बनाना सुनिश्चित करें

आर्यावर्त संवाददाता

फ़िरोज़ाबाद। स्वास्थ्य विभाग के तत्वावधान में शुक्रवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के सभागार में 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम की त्रैमासिक समीक्षा बैठक हुईI पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई इंडिया) व केनव्यू के सहयोग से आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राम बदन राम ने कहा कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शून्य से पांच साल तक के बच्चों की डायरिया से होने वाली मृत्यु दर को शून्य करना व दस्त प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम के अन्तर्गत आशा कार्यकर्ताओं, आशा संगिनी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को पीएसआई इंडिया के सहयोग से प्रशिक्षित किया जा चुका हैI इसके साथ ही डायरिया रोको अभियान (स्टॉप डायरिया कैम्पेन) के दौरान ई- रिक्शा के माध्यम से डायरिया से बचाव और प्रबन्धन के बारे में प्रचार-प्रसार किया जाएगा I इस दौरान प्रचार-प्रसार सामग्री का वितरण किया जाएगा।

इस मौके पर डिस्ट्रिक्ट कम्युनिटी प्रोसेस मैनेजर (डीसीपीएम) रवि कुमार ने जनपद के सभी ब्लाक प्रोग्राम मैनेजर (बीपीएम) को निर्देशित किया कि वह अपने-अपने क्षेत्र की सभी चिकित्सा इकाइयों पर ओआरएस कार्नर बनाकर आठ जून तक रिपोर्ट प्रस्तुत करें। उन्होंने लोगों को बेहतर कार्य करने हेतु प्रेरित भी किया I शहरी स्वास्थ्य समन्वयक प्रवल प्रताप सिंह ने 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम के तहत आयोजित होने वाली गतिविधियों की वजह से आये बदलाव के बारे में चर्चा की। इसके साथ ही नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (यूपीएचसी) पर बनाए गए ओआरएस एवं ज़िंक कार्नर को लेकर भी चर्चा की। समीक्षा बैठक में पीएसआई इंडिया के राजेश कुमार प्रजापति ने 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम की अब तक की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया I हेल्थ मैनेजमेंट इन्फार्मेशन सिस्टम (एचएमआईएस) की रिपोर्ट की भी समीक्षा की गयीI जिला कार्यक्रम प्रबन्धक (डीपीएम) भानु प्रताप सिंह ने रिपोर्टिंग में सुधार के बारे में चर्चा की I डिवीज़नल अर्बन हेल्थ कोआर्डिनेटर इरसाद अहमद ने कहा कि डायरिया की पहचान समय पर होना और आवश्यक उपचार मुहैया कराना अत्यंत आवश्यक है। बैठक में जिला महिला अस्पताल के प्रतिनिधि, चिकित्सा अधिकारी, बीपीएम, बीसीपीएम, फार्मासिस्ट, एचएमआईएस ऑपरेटर, सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि और पीएसआई इंडिया से कैफुल हसन आदि उपस्थित रहे।

विभिन्न समस्याओं के खिलाफ आम आदमी पार्टी का प्रदर्शन

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

प्रयागराज। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता, राज्यसभा सांसद एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी संजय सिंह के निर्देश पर आज आम आदमी पार्टी, प्रयागराज जिला के कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश में व्याप्त भीषण बिजली संकट, अघोषित बिजली कटौती, महंगी बिजली दरों तथा स्मार्ट मीटर की गड़बड़ियों के विरोध में एंग्लो बंगाली इंटर कॉलेज के सामने बिजली विभाग पर जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के उपरांत जिलाध्यक्ष सर्वेश यादव के नेतृत्व में राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन प्रशासनिक अधिकारियों को सौंपा गया। जिलाध्यक्ष सर्वेश यादव ने कहा कि भीषण गर्मी के इस दौर में प्रदेश की जनता बिजली संकट से त्रस्त है। अनेक जिलों में 22 से 48 घंटे तक बिजली आपूर्ति बाधित रहने की घटनाएं सामने आ रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार बिजली व्यवस्था सुधारने के भी बड़े-बड़े दावे करती है, लेकिन जमीनी हकीकत इसके बिल्कुल विपरीत है। उन्होंने आरोप लगाया कि जब जनता बिजली, पानी और अन्य बुनियादी सुविधाओं की मांग कर रही है, तब सरकार के जिम्मेदार मंत्री समस्याओं का समाधान करने के बजाय गैर-जिम्मेदाराना बयानबाजी में व्यस्त हैं। जनता को राहत देने के बजाय उसकी आवाज को नजरअंदाज किया जा रहा है। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने प्रदेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए अघोषित बिजली कटौती बंद करने, निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने, बिजली दरों में वृद्धि पर रोक लगाने, आदि की मांग की। इस दौरान काशी प्रांत अध्यक्ष पवन तिवारी,अंजनी मिश्रा, जिला महासचिव सौरव सिंह, पल्लवी मालवीय, मनोज निषाद, जटाशंकर पटेल आदि साथी मौजूद रहे।

तालाब में नहाने गईं दो चचेरी बहनें गहरे पानी में डूब गईं, दोनों की चली गई जान

आर्यावर्त संवाददाता

कौशांबी। जनपद के मंझनपुर थाना क्षेत्र में शुक्रवार को दर्दनाक हादसा हुआ।शरीफपुर गांव के जजौली मजरा की रहने वाली दो चचेरी बहनें सुबह तालाब में नहाने गई थीं। स्नान के दौरान वे गहरे पानी में चली गईं डूबने के कारण मौत हो गई। घटना की जानकारी होने पर रोते-बिलखते परिवार के सदस्य मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शवों को कब्जे में ले लिया।

घर में बताकर निकली थीं दोनों बहनें

जजौली निवासी राकेश और राजेश सगे भाई हैं। दोनों जनपद के बाहर ईंट-भट्ठे पर काम करते हैं। बताते हैं कि राजेश की 13 वर्षीय बेटी संजना और राकेश की 12 वर्षीय बेटी रागिनी शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे घर से यह बताकर निकलीं कि वह गांव स्थित तालाब में नहाने जा रही हैं।

डूबते हुए एक बच्चे ने देखा तो घरवालों को पता चला

तालाब में नहाते समय संजना और रागिनी गहरे पानी में चली गईं, जिससे दोनों डूब गईं। गांव के ही किसी बालक ने उन्हें डूबते हुए देखा तो जाकर घरवालों को जानकारी दी। ग्रामीणों के साथ मौके पर पहुंचे दोनों बहनों के परिवार के सदस्यों ने संजना और रागिनी की तलाश कर तालाब से बाहर निकाला। इसके बाद मेडिकल कॉलेज ले गए, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय में पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन

प्रयागराज। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय, प्रयागराज की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई (055) द्वारा "पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता" विषय पर पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं सतत विकास के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे के निर्देशन में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में स्वयंसेविकाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए पर्यावरण संरक्षण से संबंधित आकर्षक पोस्टर एवं प्रेरणादायक स्लोगन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा प्लास्टिक मुक्त पर्यावरण का संदेश दिया गया। छात्राओं ने प्रकृति संरक्षण एवं स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने का संकल्प भी लिया।

मदरसे के हॉस्टल से नाराज छात्रा लापता, सीसीटीवी में बस से गोरखपुर जाते दिखी

आर्यावर्त संवाददाता

(परतावल) महराजगंज। मदरसे के हास्टल में रहकर पढ़ाई करने से नाराज किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। उसकी मां की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। सीसीटीवी फुटेज में किशोरी परतावल से बस में सवार होकर गोरखपुर की ओर जाती दिखाई दी है।

श्यामदेउरवा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी किशोरी की मां ने पुलिस को दिए तहरीर में बताया कि किशोरी उसकी इकलौती पुत्री है। उसका एक भाई सऊदी अरब में रहता है, जबकि पिता सऊदी अरब के रियाद में रहकर काम करते हैं। घर पर केवल किशोरी और उसकी मां ही रहते हैं।

किशोरी भिटौली क्षेत्र के परसौनी स्थित एक मदरसे में हास्टल में रहकर कक्षा 10 की पढ़ाई करती थी। मां के अनुसार, किशोरी पिछले कुछ समय से हास्टल में रहकर पढ़ाई नहीं करना चाहती थी। बुधवार सुबह करीब 11:30 बजे वह स्कूटी की सर्विस कराने के लिए परतावल आई थी।

इसके बाद उसने एक दुकान के पास स्कूटी खड़ी कर दी। काफी देर तक घर वापस न लौटने पर उसकी तलाश शुरू की गई। बाद में क्षेत्र में लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच करने पर पता चला कि छात्रा एक बस में सवार होकर गोरखपुर की ओर चली गई थी।

इसके बाद स्वजन ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर उसकी तलाश शुरू कर दी है। संभावित स्थानों पर भी पुलिस टीमों को लगाया गया है।

श्यामदेउरवा थाना प्रभारी सत्यप्रकाश सिंह ने बताया कि मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। सीसीटीवी फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर किशोरी की तलाश की जा रही है। उसे सकुशल बरामद करने के लिए पुलिस टीमों को लगाया गया है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर रेलगाँव में पौधारोपण का आयोजन

प्रयागराज। रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार उत्तर मध्य रेलवे के द्वारा इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़े का आयोजन 15 मई से 05 जून तक तक किया गया। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम "क्लाइमेट चेन्ज" है । इस पूरे पखवाड़े का आज अंतिम और प्रमुख दिन था, इसी क्रम में उत्तर मध्य रेलवे में विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़े 2026 के अंतर्गत आज महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे नरेश पाल सिंह, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर अनिल कुमार द्विवेदी एवं अन्य विभागाध्यक्षों, अधिकारियों एवं कर्मचारियो द्वारा रेलगाँव कॉलोनी में मियावाकी स्थल पर पौधारोपण किया गया।

इस अवसर पर आम्रपाली, सुर्खा लाल अमरूद , अंगूर, आवला, नीबू, कटहल, इलायची, तेजपत्ता, दालचीनी इत्यादि के साथ लगभग 100 पौधे लगाए गए। इसके पश्चात स्काउट एवं गाइड टीम के बच्चो द्वारा पृथ्वी बचाओ के शीर्षक पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

बस्ती में क्षेत्र पंचायत सदस्य की निर्मम हत्या, नग्न अवस्था में मिला शव

आर्यावर्त संवाददाता

लालगंज, (बस्ती)। क्षेत्र पंचायत सदस्य की हत्या कर उसका जयरामपुर गांव के पास पड़ा मिला है। उस समय हड़कंप मच गया, जब दिवंगत की पहचान सदर ब्लाक के क्षेत्र पंचायत (बीडीसी) सदस्य मदन जायसवाल के रूप में हुई। बीडीसी के शरीर पर कपड़े नहीं थे और प्रथम दृष्टया चोट के गंभीर निशान मिले हैं, जिससे हत्या की पुष्टि की गई।

क्षेत्र पंचायत सदस्य मदन घर से निकले थे, लेकिन देर रात तक वापस नहीं लौटे। स्वजन उनकी तलाश कर रहे थे। गुरुवार सुबह जब ग्रामीण खेतों की ओर गए, तो उन्होंने शव पड़ा देखा। उसके समीप एक पल्सर वाहन मिला। इसी वाहन के पंजीकरण नंबर के आधार पर उसकी पहचान हो सकी।

घटनास्थल पर पहुंची पुलिस और फारेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए।

शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। दिवंगत के भाई रमेश जायसवाल निवासी देवरावं, थाना कोतवाली की तहरीर के आधार पर पुलिस ने अज्ञात हमलावरों के खिलाफ हत्या और अन्य संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। क्षेत्र पंचायत सदस्य की नृशंस हत्या से उनके स्वजन का रो-रोकर बुरा हाल है।

घटना को लेकर क्षेत्र में गहरा आक्रोश है। स्थानीय लोगों ने मांग की है कि इस घटना का जल्द से जल्द पर्दाफाश हो और दोषियों को कठोर से कठोर सजा मिले। इस सिलसिले में पूछे जाने पर एसएचओ विनय कुमार पाठक ने बताया, पुलिस हर पहलू से जांच कर रही है। फारेंसिक टीम की मदद ली जा रही है। संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है और जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। कानून-व्यवस्था की स्थिति नियंत्रण में है।

आशनाई व रंजिश पर चल रही जांच

दिवंगत मदन जायसवाल बीडीसी के साथ-साथ गांव में कोटा संचालित करते थे। बताते हैं कि वह प्राप्टी डीलिंग का भी काम करते थे। स्वजन के मुताबिक बीते दिनों कुछ लोगों से उनका मनमुटाव चल रहा था। लेकिन जिस अवस्था में शव मिला है। पुलिस अधिकारी आशनाई के एंगल पर भी जांच-पड़ताल कर रहे हैं। मोबाइल का टावर लोकेशन व सीडीआर से पुलिस के हाथ अहम सुराग मिले हैं।

महाकुंभ में करोड़ों खर्च कर विदेशी की जगह देशी पेड़ आज छाया देते- रेवती

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश को वर्ष 2047 तक 'हरित प्रदेश' बनाने के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के संकल्प को आइना दिखाते हुए वरिष्ठ नेता पूर्व सांसद कुंवर रेवती रमन सिंह ने प्रयागराज में पर्यावरण संरक्षण को लेकर चिंता जताई है। उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मांग की है कि प्रयागराज जिला की आबादी बढ़ी और पेड़ों की संख्या घटीं। उन्होंने कहा कि बीते महाकुंभ में करोड़ों रुपए से जो विदेशी पेड़. लगाऐं गये उसकी जगह देशी पारम्परिक पेड़. लगायें गये होते तो आज इस भीषण गर्मी में शहर तप न रहा होता लोगों को छाया के साथ शुद्ध हवा मिलतीं पर्यावरण संरक्षण होता।

उन्होंने कहा कि आगामी महाकुंभ और जनपद की अन्य सड़कों के किनारे ताड़ व खजूर जैसे विदेशी पेड़ों के बजाय आम, महुआ, पीपल और बरगद जैसे पारंपरिक व पर्यावरण अनुकूल वृक्ष लगाए जाएं।

यूपी में अब घर बैठे करें 12 महीने तक के किराया अनुबंधों का ऑनलाइन पंजीकरण

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। अभी तक 12 महीने तक समयसीमा के किराया अनुबंध में लोग मनमाना स्टांप शुल्क अदा करते हैं जिसके कारण उक्त दस्तावेजों को संबंधित न्यायालय व अन्य स्थानों पर वैध नहीं माना जाता था। अब निबंधन विभाग ने ऐसे किराया अनुबंध को जनता को घर बैठे ही ऑनलाइन उपलब्ध कराने की व्यवस्था की है। जिसमें डिजिटल स्टापिंग होगी।

इस संबंध में महानिरीक्षक निबंधन द्वारा आदेश जारी किया गया है। सहायक महानिरीक्षक निबंधन शर्मा नवीन कुमार एस ने बताया कि सरकार ने 12 महीने तक की सीमा के दस लाख से कम किराया राशि के किराया अनुबंधों को न्यूनतम 500 रुपये स्टांप शुल्क अदा करके विभागीय रिकार्ड में दर्ज कराने की सुविधा दी है। विभागीय पोर्टल पर इसके लिए व्यवस्था की गई है।

किराया अनुबंध के लिए दोनों पक्षों का विवरण दर्ज करके ई-केवाईसी सत्यापन होगा। पोर्टल द्वारा स्वयं स्टांप शुल्क की गणना की जाएगी। यह भुगतान भी ऑनलाइन होगा। जिसके बाद डिजिटल स्टांपिग के साथ किराया अनुबंध का प्रिंट उपलब्ध हो जाएगा। यह दस्तावेज पोर्टल पर हमेशा उपलब्ध रहेगा। उन्होंने बताया कि विभागीय पोर्टल से प्राप्त दस्तावेज वैध होगा जिसे विधिक रूप से भी उपयोग किया जा सकेगा।

अधिवक्ता हरिप्रताप भारद्वाज ने बताया कि 11 महीने तक की समय सीमा वाले किराया अनुबंध को पंजीकृत कराना आवश्यक नहीं है। नोटरी कराकर इसका प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन इससे अधिक समय सीमा वाले अनुबंध को पंजीकृत कराना आवश्यक है। विभागीय पोर्टल से निकलने वाला यह दस्तावेज अब अधिकृत होगा।

सेंट जोसेफ कॉलेज के छात्रों ने निकाली पर्यावरण जागरूकता रैली

प्रयागराज। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सेंट जोसेफ कॉलेज, प्रयागराज द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं हरित वातावरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ महाविद्यालय के मुख्य द्वार से हुआ तथा यह सेंट जोसेफ कैथेड्रल के मुख्य द्वार तक निकाली गई। रैली में स्केटिंग, फुटबॉल, कबड्डी, शतरंज, वॉलीबॉल एवं हैंडबॉल सहित विभिन्न खेलों के खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का नेतृत्व संस्थान के प्रधानाचार्य रेव. फादर वाल्टर डी'सिल्वा ने किया। उन्होंने उपस्थित छात्रों एवं अभिभावकों को पर्यावरण संरक्षण तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया। रैली में खेल समन्वयक मोहम्मद शबी रफीक के साथ डैनी एक्का, सुश्री पूनम सिंह, उत्कर्ष शर्मा, सुश्री प्रतिभा शुक्ला, सुश्री अमृता प्रधान, प्रतीक हेमराजानी, शुभम चंद्र, अजहर उस्मानी एवं शादाब रज़ा उपस्थित रहे तथा बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

देवरिया में चखनी घाट पुल की तकनीकी खामी दूर करेंगे बीएचयू विशेषज्ञ, सेतु निगम ने शुरू की प्रक्रिया

आर्यावर्त संवाददाता

भटनी, (देवरिया)। उत्तर प्रदेश और बिहार को जोड़ने वाले चखनी घाट पर निर्माणाधीन पुल के एक पाये में सामने आई तकनीकी खामी को दूर करने के लिए अब काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), वाराणसी के विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी। सेतु निगम के अधिकारी तकनीकी जांच और सुधारात्मक कार्य की प्रक्रिया में जुट गए हैं।

सेतु निगम गोरखपुर के परियोजना प्रबंधक अरुण कुमार ने गुरुवार को निर्माणाधीन पुल का निरीक्षण कर कार्य की स्थिति का जायजा लिया। वहीं मुख्य विकास अधिकारी राजेश कुमार सिंह भी मौके पर पहुंचे और अधिकारियों से तकनीकी समस्या तथा उसके समाधान को लेकर विस्तृत जानकारी प्राप्त की। चखनी घाट पर वर्तमान में लोगों की आवाजाही का प्रमुख साधन लकड़ी का अस्थायी पुल है। बरसात

और बाढ़ के दौरान यह मार्ग काफी जोखिमपूर्ण हो जाता है। क्षेत्रीय जनता की लंबे समय से चली आ रही मांग और भाटपाररानी विधायक सभाकुंवर कुशवाहा के प्रयासों के बाद प्रदेश सरकार ने यहां स्थायी पुल निर्माण को मंजूरी दी थी। परियोजना के लिए शासन ने 16 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं। निर्माण कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा था, लेकिन पुल के एक पाये एवं उससे जुड़े स्लैब में तकनीकी खामी सामने आने के बाद निर्माण गुणवत्ता को लेकर सवाल उठने लगे। इसके बाद विभागीय स्तर पर जांच शुरू कर दी गई है। सेतु निगम के उप परियोजना प्रबंधक विजेंद्र सिंह ने बताया कि पुल के एक पाये में तकनीकी समस्या चिन्हित हुई है। इसकी जांच कराई जा चुकी है और अब समाधान के लिए बीएचयू के विशेषज्ञों से परामर्श लिया जाएगा। विशेषज्ञों की रिपोर्ट मिलने के बाद आवश्यक सुधारात्मक कार्य कराकर निर्माण को निर्धारित मानकों के अनुरूप आगे बढ़ाया जाएगा। अधिकारियों का कहना है कि सुरक्षा और गुणवत्ता से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा तथा विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर ही आगे की कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

विश्व पर्यावरण दिवस पर मुख्यमंत्री योगी ने किया पौधरोपण, 'एक पेड़ माँ के नाम' महाभियान का शुभारंभ

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज अपने सरकारी आवास पर विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आम की प्रजाति 'अरुणिका' का पौधरोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों को विश्व पर्यावरण दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं और कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से विगत नौ वर्षों में उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों का निरंतर विस्तार किया है।मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2017 में प्रदेश में वन महोत्सव के दौरान पांच करोड़ वृक्षारोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। उस समय नर्सरी और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं का व्यापक अनुभव सीमित था, फिर भी वन विभाग और अन्य विभागों के समन्वय से इस लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त किया गया। उन्होंने कहा कि यह प्रयास आगे चलकर एक व्यापक जनआंदोलन का रूप ले चुका है।मुख्यमंत्री ने बताया कि पिछले नौ वर्षों में वन महोत्सव और वृक्षारोपण अभियानों के अंतर्गत प्रदेश में 242 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के वन आवरण में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। उन्होंने इसे प्रदेश की बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि पर्यावरण संतुलन की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा तीन वर्ष पूर्व 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की शुरुआत की गई थी, जिसने पर्यावरण संरक्षण को भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर एक नई दिशा दी है। इसी क्रम में आज उत्तर प्रदेश में वृक्षारोपण महाभियान की शुरुआत की गई है, जो प्रकृति और मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभूमि और जननी दोनों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनभागीदारी से जुड़ा एक जीवनमूल्य है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियों जैसे वैश्विक ताप वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, मौसम चक्र में बदलाव और जैव विविधता पर मंडरा रहे संकटों के समाधान के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इसके साथ ही प्लास्टिक मुक्त समाज के निर्माण के लिए सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित किया जा रहा है और इसके विकल्प के रूप में पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश माटी कला बोर्ड की स्थापना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही अप्रैल से जून तक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के तालाबों से कुम्हार एवं प्रजापति समाज के लोगों को निःशुल्क मिट्टी उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा उन्हें पारंपरिक चाक के साथ-साथ सौर ऊर्जा और विद्युत चालित चाक भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे उनके आजीविका संसाधनों को मजबूती मिल रही है।मुख्यमंत्री ने जल संरक्षण के प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य में भूजल संरक्षण और वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न मॉडल लागू किए जा रहे हैं। विकास प्राधिकरणों द्वारा बड़े आवासीय और वाणिज्यिक भवनों में वर्षा जल संचयन प्रणाली को अनिवार्य किया गया है, जिससे जल संकट की समस्या को कम किया जा सके।उन्होंने कहा कि यदि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो प्रकृति सुरक्षित रहेगी और प्रकृति सुरक्षित रहेगी तो संपूर्ण जीव सृष्टि का संरक्षण संभव होगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाए।मुख्यमंत्री ने कहा कि 'एक पेड़ माँ के नाम' वृक्षारोपण महाभियान इसी संकल्प का विस्तार है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, हरित और संतुलित पर्यावरण सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

उत्तर प्रदेश 'अमृत सरोवर' निर्माण में देश में प्रथम, 19,900 से अधिक सरोवरों का निर्माण पूर्ण : उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री के जल संरक्षण के दूरगामी विजन के तहत प्रारंभ किए गए मिशन अमृत सरोवर के अंतर्गत प्रदेश ने देश में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व में राज्य में अब तक 19,900 से अधिक अमृत सरोवरों का निर्माण पूर्ण हो चुका है, जिससे उत्तर प्रदेश इस योजना के क्रियान्वयन में देश में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है।जानकारी के अनुसार, मिशन अमृत सरोवर की शुरुआत अप्रैल 2022 में जल संरक्षण, भू-जल स्तर सुधार और ग्रामीण क्षेत्रों में जल स्रोतों के पुनर्जीवन के उद्देश्य से की गई थी। इस योजना के तहत पुराने एवं उपेक्षित तालाबों को पुनर्जीवित कर उन्हें आधुनिक जल संरक्षण संरचनाओं के रूप में विकसित किया जा रहा है।उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बताया कि राज्य सरकार ग्रामीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांवों में आधारभूत संरचनाओं के विकास पर लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि परंपरा और विज्ञान के समन्वय से तालाबों और जल स्रोतों का पुनरुद्धार किया जा रहा है, जिससे जल संकट, गिरते भू-जल स्तर और अनियमित मानसून जैसी चुनौतियों से प्रभावी रूप से निपटा जा सके। अमृत सरोवरों का निर्माण न्यूनतम एक एकड़ क्षेत्रफल में किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश को 30 साल तक मिलेगी स्थिर दर पर भूटान से 511 मेगावाट जलविद्युत

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग (यूपीईआरसी) ने राज्य की ऊर्जा जरूरतों को दीर्घकालिक रूप से पूरा करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण निर्णय को मंजूरी दी है। इसके तहत भूटान के खोरलोछू जलविद्युत स्टेशन से 511 मेगावाट जलविद्युत के आयात की योजना को स्वीकृति प्रदान की गई है।आयोग ने उत्तर प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) और टाटा पावर ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (टीपीटीसीएल) के बीच 30 वर्षों के विद्युत बिक्री समझौते को मंजूरी दी है। इस समझौते के तहत भारत-भूटान सीमा पर बिजली की दर 6.75 रुपये प्रति यूनिट (फ्लैट टैरिफ) तय की गई है, जो पूरी अवधि के लिए बिना किसी वार्षिक वृद्धि के स्थिर रहेगी।जानकारी के अनुसार, खोरलोछू हाइड्रो पावर लिमिटेड (केएचपीएल) में भूटान की ड्रुक ग्रीन पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड की 60 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी है, जबकि शेष 40 प्रतिशत हिस्सेदारी टाटा पावर ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड के पास है। यह परियोजना एक रणनीतिक सीमा-पार ऊर्जा साझेदारी के रूप में विकसित की गई है।यूपीईआरसी की पीठ, अध्यक्ष अरविंद कुमार एवं सदस्य संजय कुमार सिंह ने अपने निर्णय में कहा कि यह समझौता राज्य की गर्मियों में चरम बिजली मांग को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। साथ ही यह हाइड्रो परचेज ऑब्लिगेशन की पूर्ति में भी सहायक होगा और उपभोक्ताओं को दीर्घकालिक मूल्य स्थिरता प्रदान करेगा।यूपीपीसीएल द्वारा विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 86(1)(बी) के तहत इस बिजली खरीद समझौते और स्रोत को मंजूरी देने का अनुरोध किया गया था।

विश्व पर्यावरण दिवस पर गूंजा 'ग्रीनर लखनऊ, ग्रीन इंडिया' का संकल्प

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्मदिवस एवं विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर एकाग्रता इंटरनेशनल फाउंडेशन, भारतीय योग संस्थान एवं खुशी फॉउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में वृक्षारोपण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, योग एवं स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना था।

डॉ. अवधेश द्विवेदी, एसएमओ, ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योग एवं वेलनेस संबंधी विभिन्न पहलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सरकार योग एवं समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर नागरिकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने निवारक स्वास्थ्य सेवाओं एवं वेलनेस कार्यक्रमों की बढ़ती भूमिका पर भी विशेष जोर दिया।

हिमांशु पाण्डेय, राष्ट्रीय समन्वयक, एकाग्रता इंटरनेशनल फाउंडेशन, ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा विश्व पर्यावरण दिवस के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने फाउंडेशन की "ग्रीनर लखनऊ, ग्रीन इंडिया" पहल की जानकारी देते हुए अधिक से अधिक वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में जनभागीदारी बढ़ाने का आह्वान किया।

प्रख्यात योग गुरु कृष्ण मिश्रा ने योग और पर्यावरण के गहरे संबंध पर प्रकाश डालते हुए सभी से योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने की अपील की। उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस के संदर्भ में योग के महत्व को रेखांकित करते हुए इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को भव्य रूप से मनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. प्रतिभा सिंह ने अपने संबोधन में प्लास्टिक के कम से कम उपयोग पर बल देते हुए इको-वेलनेस को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार एवं प्रकृति-अनुकूल जीवनशैली अपनाना समय की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के सांस्कृतिक सत्र ने समारोह में विशेष उत्साह का संचार किया। पिहू द्विवेदी ने योग एंथम पर मनमोहक प्रस्तुति दी, जिसे उपस्थित जनसमूह ने खूब सराहा। उनकी प्रस्तुति ने स्वास्थ्य, समरसता और पर्यावरण चेतना के संदेश को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया तथा विश्व पर्यावरण दिवस एवं आगामी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की भावना को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया।

इस कार्यक्रम को मैक्स हॉस्पिटल, शांति शेड, योगधारा, पुरुषोत्तम स्कूल ऑफ योगा एवं महिला पतंजलि योग समिति का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इन संस्थाओं के सहयोग ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य और सामुदायिक सहभागिता के संदेश को और अधिक सशक्त बनाया।

कार्यक्रम के अंतर्गत वृक्षारोपण के साथ-साथ विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी आयोजित की गईं, जिन्होंने उपस्थित लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय भूमिका निभाने हेतु प्रेरित किया। सभी प्रतिभागियों ने स्वच्छ, हरित एवं सतत भारत के निर्माण का संकल्प लिया।

इस अवसर पर वैष्णवी, श्रुति, अलंकृता, आउन, आदित्य, प्रतीक, शुभ, देव, आकाश, कुशन एवं शिवांगी सहित अनेक गणमान्य अतिथि, योग साधक एवं युवा स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर लखनऊ मेट्रो में पर्यावरण कार्यशाला का आयोजन

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर लखनऊ मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (पर्यावरण शिक्षा), अवध प्रांत द्वारा हजरतगंज मेट्रो स्टेशन परिसर में एक विशेष पर्यावरण जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुशील कुमार, प्रबंध निदेशक, लखनऊ मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन रहे। उन्होंने अपने संबोधन में पर्यावरण संरक्षण को वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताते हुए जनसहभागिता पर बल दिया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. कीर्ति विक्रम सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू तथा क्षेत्र संयोजक (पर्यावरण शिक्षा), शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, पूर्वी उत्तर प्रदेश ने "पर्यावरण संरक्षण में नागरिकों की भूमिका तथा सतत विकास" विषय पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन के संरक्षण के बिना भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य की कल्पना संभव नहीं है।

इस अवसर पर निमेष कपूर, वैज्ञानिक, बीरबल साहनी पुरावनस्पति संस्थान तथा चंद्रभूषण तिवारी, पर्यावरणविद् ने भी पर्यावरण संरक्षण एवं जैव विविधता के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की जानकारी देते हुए के. बी. पंत, सह-संयोजक, पर्यावरण शिक्षा, अवध प्रांत ने बताया कि इस कार्यक्रम का आयोजन जन शिक्षण संस्थान, लखनऊ के सहयोग से किया गया। उन्होंने कहा कि समाज के विभिन्न वर्गों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से इस प्रकार के कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण विषयक एक आकर्षक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसे प्रतिभागियों द्वारा सराहा गया। साथ ही कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधे भेंट किए गए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं पर्यावरण प्रेमियों ने सहभागिता कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

गुडम्बा पुलिस की बड़ी कार्रवाई, जन्मदिन पार्टी के पास अवैध पिस्टल सहित युवक गिरफ्तार

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। थाना गुडम्बा पुलिस ने रात्रि गश्त और चेकिंग अभियान के दौरान अवैध असलहा रखने वाले एक युवक को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से एक अवैध पिस्टल और एक जिंदा कारतूस बरामद किया है तथा उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई शुरू कर दी गई है।प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 05 जून 2026 की रात्रि थाना गुडम्बा के उपनिरीक्षक संदीप सिंह गौर अपनी पुलिस टीम के साथ क्षेत्र में संदिग्ध व्यक्ति एवं वाहनों की चेकिंग तथा गश्त पर थे। इसी दौरान सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम बसहा में आयोजित एक जन्मदिन कार्यक्रम में शामिल एक व्यक्ति के पास अवैध पिस्टल है और वह कार्यक्रम स्थल से निकलकर आसपास घूम रहा है।सूचना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस टीम तत्काल ग्राम बसहा पहुंची और संदिग्ध व्यक्ति की तलाश शुरू की। जांच के दौरान ग्राम बसहा स्थित एक खाली प्लॉट में एक संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिया, जिसे पुलिस ने रोककर पूछताछ की। उसने अपनी पहचान राजू उर्फ काजू पुत्र नागेश्वर, निवासी ग्राम बसहा, थाना गुडम्बा, लखनऊ, उम्र लगभग 24 वर्ष के रूप में बताई।तलाशी लेने पर अभियुक्त के कब्जे से एक अवैध पिस्टल .32 बोर तथा एक जिंदा कारतूस .32 बोर बरामद हुआ। पुलिस द्वारा जब पिस्टल के संबंध में लाइसेंस या वैध दस्तावेज मांगे गए तो आरोपी कोई भी अभिलेख प्रस्तुत नहीं कर सका।अवैध हथियार मिलने पर पुलिस ने आरोपी को रात लगभग 02:40 बजे हिरासत में ले लिया।

संक्षेप

चिनहट में सीवर सफाई के दौरान हादसा, कर्मचारी फंसा; अस्पताल में मृत घोषित, जांच जारी

लखनऊ। थाना चिनहट क्षेत्रांतर्गत चिनहट तिराहा फल मंडी के पास सीवर लाइन की सफाई के दौरान एक दर्दनाक हादसा सामने आया, जिसमें एक कर्मचारी की मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी।प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 05 जून 2026 को सूचना मिली कि सीवर लाइन में कार्य करते समय एक कर्मचारी अंदर फंस गया है। मौके पर पहुंची पुलिस ने पाया कि ललित पुत्र बहराइची, लालाराम, आकाश कुमार एवं राजन सीवर लाइन की सफाई का कार्य कर रहे थे। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि कार्य के दौरान कर्मचारियों के पास सुरक्षा किट उपलब्ध थी और वे आवश्यक सुरक्षा उपकरणों के साथ कार्य कर रहे थे।कार्य के दौरान लालाराम सीवर लाइन के अंदर कार्य करते समय अचानक फंस गए। उनके साथ मौजूद अन्य कर्मचारियों एवं स्थानीय लोगों की सहायता से उन्हें बाहर निकाला गया। बाहर निकालने के बाद उनकी हालत गंभीर देख तत्काल एम्बुलेंस की मदद से उन्हें डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान भेजा गया।हालांकि बाद में साथियों द्वारा उन्हें चंदन निजी चिकित्सालय ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद लालाराम को मृत घोषित कर दिया।घटना के बाद क्षेत्र में स्थिति सामान्य बनी हुई है और किसी प्रकार की कानून-व्यवस्था की समस्या नहीं हुई। पुलिस ने घटनास्थल से आवश्यक साक्ष्य एकत्र कर लिए हैं तथा मामले की विस्तृत जांच की जा रही है। साथ ही अग्रिम विधिक कार्रवाई प्रचलित है।

चिनहट पुलिस ने 24 घंटे के भीतर बाइक चोरी का किया खुलासा, एक अभियुक्त गिरफ्तार, नकदी बरामद

लखनऊ। थाना चिनहट पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए बाइक चोरी के एक मामले का 24 घंटे के भीतर अनावरण कर एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई राशि का हिस्सा भी बरामद किया है, जबकि वाहन की बरामदगी और उसके साथी की तलाश जारी है।प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 04 जून 2026 को वादी सतीश कुमार यादव सिंह पुत्र राम आसरे, निवासी 2-ए मल्हौर स्टेशन रोड, इण्डियन बैंक के सामने, चिनहट, लखनऊ द्वारा थाना चिनहट में शिकायत दर्ज कराई गई थी कि उनकी बाइक (वाहन संख्या यूपी32एनक्यू8591, बजाज प्लेटिना) अज्ञात चोर द्वारा चोरी कर ली गई है। इस पर थाना चिनहट में मु0अ0सं0-296/26 धारा 303(2)/317(2) बीएनएस के तहत मुकदमा दर्ज किया गया।घटना की गंभीरता को देखते हुए प्रभारी निरीक्षक चिनहट द्वारा पुलिस टीम का गठन किया गया और जांच शुरू की गई।

मोहनलालगंज में 19 वर्षीय युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या, पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा

लखनऊ। थाना मोहनलालगंज क्षेत्र अंतर्गत ग्राम हीरालालखेड़ा मजरा सिसेंडी में शुक्रवार सुबह एक 19 वर्षीय युवक द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या किए जाने का मामला सामने आया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा की कार्रवाई पूरी करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है।प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 05 जून 2026 को सुबह करीब 08:45 बजे थाना मोहनलालगंज पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम हीरालालखेड़ा मजरा सिसेंडी में एक युवक ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची, जहां परिजनों द्वारा युवक को फंदे से नीचे उतार लिया गया था।पुलिस की प्रारंभिक जांच में पता चला कि मकान में किराए पर रह रहे एक व्यक्ति ने सुबह लगभग 08:30 बजे युवक को उसके कमरे में छत में लगे पंखे से गमछे के सहारे फांसी के फंदे पर लटका देखा था। इसके बाद परिजनों और स्थानीय लोगों को घटना की जानकारी दी गई।मृतक की पहचान विकास यादव पुत्र विनीत यादव, उम्र लगभग 19 वर्ष, निवासी ग्राम हीरालालखेड़ा मजरा सिसेंडी, थाना मोहनलालगंज, लखनऊ के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार घटना के समय उसके पिता उजाला हॉस्पिटल में मेडिकल असिस्टेंट के पद पर रात्रि ड्यूटी पर थे।

विश्व पर्यावरण दिवस : पौधे सिर्फ़ प्लांट नहीं, ऑक्सीजन प्लांट हैं : डॉ. सूर्यकान्त

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग में आज विश्व पर्यावरण दिवस पर एक सार्थक एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन वायु मित्र अभियान (डॉक्टर्स फॉर क्लीन एयर एंड क्लाइमेट चेंज एवं लंग केयर फाउंडेशन) के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. सूर्यकान्त के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उन्होंने बताया कि "एक पेड़ माँ के नाम" भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक जन-अभियान है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को मातृत्व के सम्मान से जोड़ते हुए वृक्षारोपण को जन-आंदोलन बनाना है। इस अभियान का उद्देश्य केवल वृक्षारोपण कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह भावनात्मक, सामाजिक और पर्यावरणीय चेतना का संगम है। इसका उद्देश्य लोगों को प्रकृति से जोड़ना, हरित आवरण बढ़ाना, जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करना तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण सुनिश्चित करना है।

रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने तथा मानव स्वास्थ्य की रक्षा में पेड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि मानव भोजन के बिना तीन सप्ताह और पानी के बिना तीन दिन तक जीवित रह सकता है, लेकिन स्वच्छ वायु के बिना तीन मिनट से अधिक जीवित नहीं रह सकता। एक व्यक्ति प्रतिदिन लगभग 25 हजार बार श्वास लेता है तथा लगभग 10 हजार लीटर वायु उसके फेफड़ों से होकर गुजरती है, जिससे हमें रोज 500 लीटर ऑक्सीजन मिलती है, जो हमें न सिर्फ जिंदा रखती है बल्कि काम करने के लिए ऊर्जा भी प्रदान करती है। ऐसे में वायु की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है।

उन्होंने कहा, "पेड़ लगाना केवल पर्यावरण संरक्षण का कार्य नहीं है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य और कल्याण में एक निवेश है। हर पेड़ स्वच्छ हवा, कम प्रदूषण और एक स्वस्थ ग्रह के निर्माण में योगदान देता है।" इसीलिए डॉ सूर्यकान्त कहते है कि पौधे सिर्फ़ प्लांट नहीं, ऑक्सीजन प्लांट हैं। क्योंकि पौधे हमें अजीवन निःशुल्क ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन चुका है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वाहनों की बढ़ती संख्या, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग तथा प्लास्टिक प्रदूषण ने वायु, जल और मिट्टी की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। विशेष रूप से वायु प्रदूषण आज श्वास संबंधी रोगों का एक प्रमुख कारण बन चुका है।

ऑर्गेनाइजेशन फॉर कंजर्वेशन ऑफ एनवायरनमेंट एंड नेचर (ओशन) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त ने कहा कि प्रकृति-आधारित समाधान जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने का सबसे प्रभावी माध्यम हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2018 से वायु मित्र अभियान के माध्यम से वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन, शहरी हरित क्षेत्रों के विकास तथा स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग के लिए व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। हरित वातावरण न केवल वायु गुणवत्ता को बेहतर बनाता है, बल्कि मानसिक तनाव को कम कर लोगों के स्वास्थ्य में भी सुधार करता है। विभागाध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि उनके अथक प्रयासों से विभाग के परिसर में कई ग्रीन ज़ोन विकसित किए गए हैं, जो पूरे केजीएमयू परिसर में सर्वाधिक हैं। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति को स्वस्थ जीवित रहने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है और यह हमें पेड़-पौधों से ही प्राप्त होती है। अतः पौधे ही भविष्य की ऑक्सीजन हैं। यह संयोग कहें या विभाग का सौभाग्य कि श्वास रोग विभाग में शुद्ध वायु का महत्व और भी अधिक है। विभाग परिसर में ग्रीन गार्डन एवं नवग्रह वाटिका का भी निर्माण किया गया है। वाटिका में फल, फूल एवं औषधीय गुणों से भरपूर पेड़-पौधे लगाए गए हैं। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार की साग-सब्जियों एवं अन्य पौधों का भी रोपण किया गया है। ये पौधे विभाग की सुंदरता में चार चाँद लगाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति उत्कृष्ट कार्य का संदेश देते हैं तथा सभी को प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में विभाग के चिकित्सक डॉ. संतोष कुमार, डॉ. आनंद श्रीवास्तव, डॉ. अंकित कुमार, सीनियर एवं जूनियर डॉक्टर्स, नर्सिंग स्टाफ, शोधार्थियों, पीआरसी टीम तथा विभागीय कर्मचारियों ने वृक्षारोपण अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया और विभागीय परिसर में पौधे लगाए। यह गतिविधि एक स्वच्छ, हरित एवं स्वस्थ पर्यावरण को बढ़ावा देने के प्रति विभाग की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण संबंधी पहलों का समर्थन जारी रखने तथा वायु गुणवत्ता में सुधार एवं जलवायु परिवर्तन से निपटने की दिशा में सक्रिय योगदान देने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

तालमेल और सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता

गेहूं और सरसों की फैसल तैयार है, मंडियों में खरीदारी शुरू हो गई है। कुछ मंडियों में सुचारू रूप से खरीदारी हो रही है किंतु ऐसी बहुत सी मंडियां हैं, जहां किसानों को परेशानियां झेलनी पड़ रही है। कहीं बारिश और ओले के कारण खेत में अनाज गीला हो गया है तो कहीं मंडी में खुले आसमान के नीचे। किसान की गाढ़ी कमाई पर पानी फिर रहा है, अधिकारी नम माल लेने से मना कर रहे हैं। मंडियों में अव्यवस्था के कारण किसान का सब्र टूट रहा है और कुछ जगहों पर किसानों ने अपना रोष भी प्रकट किया है। अनेक मंडियों में उठान की स्थिति खराब है, शेड में, बाहर सड़क पर माल पड़ा है, टोकन काटने की व्यवस्था ठीक नहीं है। कभी-कभी मंडी के आगे मीलों लंबी लाइन लग जाती है, रात रात भर किसान को जागकर अपने माल की सुरक्षा करनी पड़ती है। मूलभूत सुविधाओं जैसे पीने का स्वच्छ पानी, शौचालय और साफ-सफाई का अभाव है।

मंडी को जाने वाली सड़कों में गड्ढे, अवैध रूप से खड़े वाहन और आवारा पशु, जगह-जगह जाम की समस्या से किसानों को जूझना पड़ता है। कुछ मंडियों में कंप्यूटर ऑपरेटर और स्टाफ की कमी है तो कुछ में तौल के लिए कांटे की व्यवस्था भी समय पर नहीं हो पाई। आवश्यक मात्रा में बारदानों (कट्टों) का अभाव भी परेशानी का कारण बन जाता है। यद्यपि सभी मंडियों में ऐसी अव्यवस्था नहीं है किंतु काफी संख्या में ऐसे मंडी है जहां व्यवस्था सुधार की एवं मंडी प्रबंधकों और सरकारी विभाग के बीच तालमेल और सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि किसान आसानी से अपनी फसल बेच सकें। अनाज की खरीद के सीजन में मंडियों से जो रिपोर्ट आ रही हैं वे चिंताजनक हैं। चरखी दादरी में पहले ही दिन मंडी में हजारों किसान फसल लेकर पहुंचे, लंबी लाइन लग गई, किसानों के वाहन घंटों जाम में फंसे रहे, पुलिस और प्रशासन को स्थिति संभालने के लिए खासी मशक्कत करनी पड़ी। बैकडोर से टोकन लेने और व्यापारियों के वाहनों को बैकडोर से एंट्री देने के आरोप लगे। रोहतक की एक मंडी में किसानों को मजबूरी में अपनी फसल प्राइवेट कंपनियों को बेचने के आरोप लगे। ओला और बे मौसम बारिश की वजह से वहां फसल खराब हुई, अधिकारी फसल में नमी के कारण खरीद नहीं कर रहे थे।

सोनीपत के गन्नौर में मंडी सेक्रेटरी और अधिकारियों की मिलीभगत से किसानों को जो नुकसान हुआ उससे उनमें जबरदस्त रोष था, मंडी पर उन्होंने ताला लगा दिया। पोर्टल पर फसल रजिस्ट्रेशन करवाने में भी धांधली के आरोप लगे। जहां किसान की 5 से 6 एकड़ का रजिस्ट्रेशन था वहां अधिकारी 1 से 2 एकड़ का माल ही खरीद रहे थे। भिवानी की एक मंडी में हजारों क्विंटल सरसों खरीद के बाद कट्टों में पड़ी बारिश में भीग गई, बचाव का कोई इंतजाम नहीं था।

पूरी मंडी पानी से तरबतर थी, फसल की गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ा जिसका खामियाजा किसानों को भुगतना पड़ रहा है। मौसम खराब होने की आशंका से किसानों ने भारी मजदूरी देकर समय से फसल कटवा दिया था और अब जब फसल लेकर मंडी पहुंचे तो वहां मौसम की मार झेलनी पड़ी। सरसों का रंग भूरा हो गया और उसकी गुणवत्ता कम हो गई। सिरसा की मंडी में उठान की स्थिति बेहद खराब रिपोर्ट की गई। उठान के लिए एजेंसियों का चुनाव समय से नहीं हुआ।

गेहूं की आवक एकाएक बढ़ जाने से अधिकारियों के हाथ पैर फूलने लगे, टोकन काटने के लिए पर्याप्त मात्रा में कर्मचारी नहीं थे, ना ही पूरे कंप्यूटर ऑपरेटर। नियमानुसार फसल उठान ट्रकों द्वारा किया जाना चाहिए किंतु एजेंसी ट्रैक्टर-ट्राली द्वारा करा रही है जो सस्ती पड़ती है। यह तब हो रहा है जब ट्रैक्टर के कमर्शियल उपयोग पर रोक लगी हुई है। पंजाब की मंडियों में फसल पहुंच रही है, लेकिन खरीद का पुख्ता इंतजाम बहुत कम मंडियों में है।

'मेरी फसल मेरा ब्योरा के तहत प्रदेश के 9.25 लाख किसानों ने फसल बेचने के लिए 6.45 लाख एकड़ का पंजीकरण कराया। आरोप लगाया जा रहा है कि 10. 40 एकड़ रकबा ऐसा है, जिसका डेटा मिसमैच कर रहा है। मध्य प्रदेश के कई मंडियों में समय से उठान न होने से आवारा पशुओं से अनाज की रक्षा के लिए किसान रात रात भर जाकर अपने फसल की रक्षा करते हैं। अवैध रूप से ट्रक खड़े रहते हैं, मंडी को जोड़ने वाली सड़कों में गड्ढे, सफाई की कमी और मंडी में अतिक्रमण जैसी अव्यवस्था से किसान जूझ रहे हैं। देश के लगभग सभी प्रदेशों में मंडियों की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। पिछले वर्ष इन्हीं दिनों दिल्ली की नरेला मंडी, जो एशिया की सबसे बड़ी अनाज मंडी है, उसमें करोड़ों रु पए का अनाज भीग गया था, बारिश से बचाव का कोई पुख्ता इंतजाम नहीं था। मंडियों में व्यवस्था के खिलाफ आढ़तियों की अपनी शिकायतें हैं। उनका मानना है कि उन्हें जो आढ़त मिलती है वह कम हैं, उनके खर्चे पूरे नहीं होते, उसमें बढ़ोतरी होनी चाहिए। मंडी के श्रमिकों के पारिश्रमिक के बारे में भी सरकार को विचार करना चाहिए खाद्य पदाथरे और जीवन की आवश्यकता की वस्तुओं की कीमतें दिनों-दिन बढ़ रही है श्रमिकों की मजदूरी भी बढ़ाई जानी चाहिए।

हीट वेव की गिरफ्त में भारत: तपती धरती, तड़पता जीवन

योगेश कुमार गोयल

बदलती जलवायु के कारण भारत सहित दुनिया के अनेक हिस्से भीषण हीट वेव की चपेट में है। अब यह संकट पारंपरिक क्षेत्रों से निकलकर तटीय इलाकों तक फैल चुका है। अंधाधुंध शहरीकरण, घटती हरियाली और कंक्रीट के बढ़ते निर्माण से 'अर्बन हीट आइलैंड' का प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे दिन और रातें अत्यधिक गर्म हो रही हैं। राजस्थान के बाड़मेर से लेकर दिल्ली की गलियों और विदर्भ के मैदानों तक पारा 45 डिग्री सेल्सियस के स्तर को पार कर चुका है। यह केवल बढ़ते तापमान का आंकड़ा नहीं है बल्कि यह एक गहराता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट और आर्थिक चेतावनी है। हीट वेव अब केवल मौसमी असुविधा नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और मानव अस्तित्व के लिए गंभीर संकट बन चुकी है। बढ़ते तापमान, घटती हरियाली और कंक्रीट के फैलते जंगलों ने जीवन को लू की लपटों में समेट दिया है।

> वैज्ञानिकों के मुताबिक तापमान में वृद्धि से आगामी वर्षों में हीट वेव, गर्मी का मौसम ज्यादा समय तक रहने और सर्दी के मौसम का समय घटने जैसी स्थितियां पैदा होंगी। इस बारे में वैज्ञानिकों का स्पष्ट कहना है कि जिस जलवायु परिवर्तन के बारे में अब तक हम केवल पढ़ते-सुनते रहे थे

मौसम विभाग और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के ताजा आंकड़ों ने एक डरावनी तस्वीर पेश की है। पिछले चार दशकों में हीट वेव (लू) से होने वाली मौतों में 62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। गौर करने वाली बात यह है कि हीट वेव अब केवल अपने पारंपरिक गढ़ (उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत) तक सीमित नहीं रही बल्कि इसने दक्षिण भारत के उन तटीय इलाकों को भी अपनी चपेट में ले लिया है, जो ऐतिहासिक रूप से कम ताप प्रभावित रहते थे। अध्ययन बताते हैं कि 1981 से 2000 के बीच लू की औसत अवधि जहां 2.5 से 5.5 दिन थी, वहीं 2001 से 2020 के बीच यह बढ़कर 8.5 दिन तक पहुंच गई। लू का भौगोलिक दायरा भी 11.9 लाख वर्ग किलोमीटर से फैलकर 18.1 लाख वर्ग किलोमीटर हो चुका है। यह विस्तार बताता है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की आशंका नहीं, वर्तमान की कड़वी हकीकत है। हमारे शहर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील हो चुके हैं, जो दिनभर गर्मी सोखते हैं और रात में उसे मुक्त करते हैं, जिससे 'अर्बन हीट आइलैंड' का प्रभाव पैदा होता है। इस तपती आग में सबसे अधिक जोखिम उन लोगों (रेहड़ी-पटरी वाले, निर्माण श्रमिक और दिहाड़ी मजदूर) का है, जो खुले आसमान के नीचे अपना वजूद तलाशते हैं। इनके पास न तो कूलिंग सेंटर की सुविधा है और न ही काम के घंटों में लचीलापन। इसके साथ ही बच्चे और बुजुर्ग इस बढ़ते 'डिस्कंफर्ट इंडेक्स' के सबसे आसान शिकार बन रहे हैं।

वैज्ञानिकों के मुताबिक तापमान में वृद्धि से आगामी वर्षों में हीट वेव, गर्मी का मौसम ज्यादा समय तक रहने और सर्दी के मौसम का समय घटने जैसी स्थितियां पैदा होंगी। इस बारे में वैज्ञानिकों का स्पष्ट कहना है कि जिस जलवायु परिवर्तन के बारे में अब तक हम केवल पढ़ते-सुनते रहे थे, वह अब हमारे सामने आकर खड़ा हो गया है। भारत में मई का महीना गर्म हवाओं (लू) का चरम समय होता है और लू की घटनाओं को भी मौसम में दिन-प्रतिदिन बदलाव का स्वाभाविक हिस्सा माना जाता है लेकिन चिंता की बात यही है कि लू की तीव्रता लगातार वर्ष दर वर्ष बढ़ रही है। पिछले करीब डेढ़ दशकों में 2009, 2010, 2016, 2017 और 2022 भारत में रिकॉर्ड किए गए पांच सबसे गर्म वर्ष रहे। आईएमडी के मुताबिक 15 सबसे गर्म वर्षों में से 11 वर्ष 2008 से 2022 के बीच ही दर्ज किए गए। यह जानना भी जरूरी कि हीट वेव आखिर है क्या? जैसा कि नाम से ही जाहिर है, हीट वेव अत्यधिक गर्म मौसम की अवधि है, जो प्रायः दो या ज्यादा दिनों तक रहती है। जब तापमान किसी क्षेत्र के सामान्य औसत तापमान से अधिक हो जाता है तो उसे 'हीट वेव' कहा जाता हं। आईएमडी के अनुसार मैदानी इलाकों का अधिकतम तापमान जब 40 डिग्री सेल्सियस तक और पहाड़ी क्षेत्रों का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो लू चलने लगती है और यदि तापमान 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो यह खतरनाक लू की श्रेणी में कही जाती है। इसी प्रकार तटीय क्षेत्रों में जब तापमान 37 डिग्री सेल्सियस हो जाता है तो लू चलने लगती है। हीट वेव के कारण लोगों के बीमार होने और हीट स्ट्रोक का खतरा बहुत बढ़ जाता है तथा सैंकड़ों लोगों की मौत हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 1998 से 2017 के बीच हीट वेव के कारण 1.66 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी और यह आंकड़ा अब वर्ष दर वर्ष तेजी से बढ़ रहा है।

आईआईटी खड़गपुर के एक अध्ययन से यह स्पष्ट हो चुका है कि तापमान में वृद्धि तथा लू का मानव शरीर पर व्यापक असर पड़ रहा है। गर्म हवाओं से ब्रेन स्ट्रोक, हृदयाघात, नसों में खून के थक्के जमने की आशंका, स्थायी विकलांगता का खतरा बढ़ जाता है और इससे मृत्यु दर में भी वृद्धि हो सकती है। विशेषज्ञों के अनुसार, हीट वेव बाढ़ के बाद दूसरी सबसे घातक आपदा है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौतियां पेश कर रही है। लू का असर हृदय तथा फेफड़े जैसे अंगों पर सर्वाधिक पड़ता है, जो बेहद खतरनाक हो सकता है। हीट वेव से ऐसे लोगों की स्थिति और खराब होने की संभावना होती है, जो हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गुर्दे की बीमारी इत्यादि समस्याओं से पीड़ति हैं। आईएमडी के मुताबिक वैसे तो हर साल दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना इत्यादि उत्तर पश्चिमी भारत, मध्य, पूर्व और उत्तर प्रायद्वीपीय भारत के मैदानी इलाकों में मार्च से जून के दौरान हीट वेव का दौर चलता है लेकिन जैसे-जैसे पृथ्वी की जलवायु गर्म होती जा रही है, दिन और रात भी सामान्य से अधिक गर्म होते जा रहे हैं, जिससे हीट वेव की घटनाएं बढ़ रही हैं और मौतों तथा बीमारियों की आशंका भी बढ़ रही है। प्रश्न यह है कि भारत में हीट वेव को लेकर ऐसी स्थिति क्यों निर्मित हो रही है? पिछले 30 वर्षों के तापमान तथा गर्म हवाओं का आकलन करते हुए आईआईटी खड़गपुर के एक अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया था कि घटती हरियाली, शहरीकरण तथा कंक्रीट से निर्माण के कारण ही अब प्रतिवर्ष हीट वेव में वृद्धि हो रही है। प्रायः देखा जाता है कि एक ही शहर में कुछ जगहों पर उच्च तापमान दर्ज किया जाता है तो कुछ जगहों पर तापमान कम रहता है। कुछ स्थानीय कारण इसके लिए जिम्मेदार होते हैं। दरअसल अधिक हरे-भरे इलाकों में तापमान कम दर्ज किया जाता है जबकि चारों ओर बसी कालोनियों तथा ऊंची-ऊंची इमारतों वाले इलाकों में तापमान ज्यादा दर्ज होता है। तकनीकी भाषा में इसे 'अर्बन हीट आईलैंड इफैक्ट' कहा जाता है। पेड़-पौधों की कमी, अधिक शहरीकरण तथा कंक्रीट से अधिक निर्माण इत्यादि विविध कारणों से शहर ज्यादा तप रहे हैं। इसके पीछे एक बड़ी वजह शहरों में निरन्तर बढ़ता जनसंख्या घनत्व भी है। जनसंख्या का घनत्व बढ़ते जाने से हरियाली नष्ट हो रही है और शहरों में हरे-भरे प्राकृतिक क्षेत्रों को भी सीमेंट तथा कंक्रीट के तपते जंगलों में तब्दील किया जा रहा है।

टिप्पणी

बच्चों में ऑनलाइन गेमिंग की लत

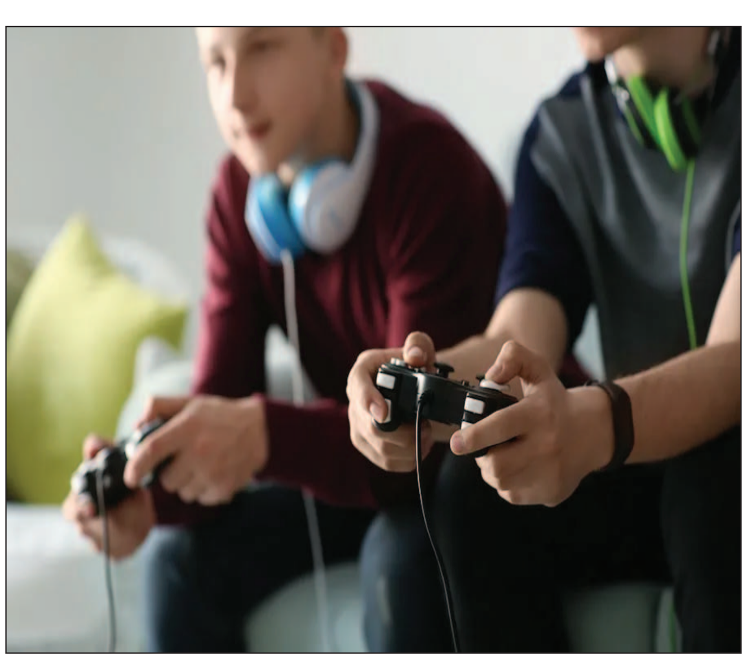

एक बड़ी समस्या बच्चों में ऑनलाइन गेमिंग की बढ़ी लत है। इसे कैसे नियंत्रित और अनुशासित किया जाए, इस चुनौती का सामना तमाम समाजों को करना पड़ रहा है। भारत में क्या किया जाए, यह महत्त्वपूर्ण सवाल है।

ऑनलाइन गेमिंग को विनियमित करने का कानून पारित करने के लगभग एक साल बाद केंद्र ने इस पर अमल के नियम तय किए हैं। स्पष्टतः इनमें गेमिंग के हानिकारक असर और तकनीकी प्रगति के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है। कहा जा सकता है कि इस कोशिश में सरकार काफी हद तक सफल है। ऑनलाइन गेमिंग प्रोत्साहन एवं विनियमन कानून मुख्य रूप से ऑनलाइन जुए को रोकने के लिए बनाया गया था। गेम के नाम पर तब सट्टेबाजी का धंधा इतने बड़े पैमाने पर फैलाया गया कि परिवारों के बर्बाद होने की खबरें आम हो गई थीं। इसका चस्का लगाने के लिए खास कर क्रिकेट मैचों को जरिया बनाया गया।

इसीलिए जब सरकार ने उस पर रोक लगाई, तो समाज के विवेकशील तबकों ने राहत महसूस की। ये अच्छी बात है कि उद्योग जगत की भारी लॉबिंग के बावजूद सरकार अपने इरादे पर अडिग रही है। तय नियमों के तहत जिन गेम्स में पैसे का लेन-देन होता है, उन पर रोक लगी रहेगी। इनमें पोकर, रमी, फैंटेसी स्पोट्र्स और दांव लगाने से संबंधित गेम शामिल हैं। बाकी ई-स्पोट्र्स को वैध प्रतिस्पर्धा माना गया है। ऐसे गेम्स को डेवलप करने और संचालित करने पर सामान्यतः कोई रोक नहीं होगी। अगर किसी मामले में सरकार को लगता है कि उस गेम के हानिकारक प्रभाव हो रहे हैं, तो उस पर जरूर रोक लगाई जा सकेगी।

इन पर निगरानी के लिए सूचना तकनीक मंत्रालय के तहत एक ऑनलाइन गेमिंग प्राधिकरण बनाया जाएगा। ये सारे नियम सही दिशा में हैं। लेकिन इन नियमों के दायरे से बाहर रह गई एक बड़ी समस्या बच्चों और किशोरों में ऑनलाइन गेमिंग की बढ़ी लत है। इसे कैसे नियंत्रित और अनुशासित किया जाए, इस चुनौती का सामना तमाम समाजों को करना पड़ रहा है। कुछ देशों में इसकी वैधानिक व्यवस्था की गई है, जिसमें इस रुझान को अनुशासित करने का दायित्व संचालक कंपनियों पर डाला गया है। भारत में इस दिशा में क्या किया जाए, यह महत्त्वपूर्ण सवाल है। लगे हाथ सरकार को इस बारे में भी चर्चा छेड़नी चाहिए थी। बहरहाल, अभी भी देर नही हुई है।

ब्लॉग

रील्समय सब जग जानी

उमेश चतुर्वेदी

तुलसी के लिए समूचा विश्व ही श्रीराम और सीता की तरह रहा। आज की पत्रकारिता पर जिधर भी नजर फिराएं, कुछ उसी तरह टीवी मय ही लगती है। लगता नहीं कि मीडिया की की दुनिया में अखबार भी हैं, पत्रिकाएं भी हैं, रेडियो भी है और सबसे अहम इंटरनेट भी है। दो सौ साल की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास गरिमा के सोपानों से भरा हुआ है। नवजागरण को बढ़ावा देने, राष्ट्र निर्माण और सार्वजनिक जीवन मूल्यों की स्थापना में हिंदी पत्रकारिता ने महती भूमिका निभाई है। स्वाधीनता आंदोलन की कोख से उपजी हिंदी पत्रकारिता ने स्वाधीनता की लड़ाई भी लड़ी, हिंदी भाषा और साहित्य के उत्थान का माध्यम भी बनी, लेकिन दो सौ साल की यात्रा के उपरांत बाद के वर्षों के उसके इतिहास को देखते हैं तो वह सिर्फ टीवीमय नजर आती है, टीवी से भी आगे बढ़कर वह रीलमय नजर आती है। छापे से शुरू हिंदी पत्रकारिता का यह रूप छापे और रेडियो की उपस्थिति के बावजूद आज वह रील्स के इर्द-गिर्द घूमती नजर आ रही है। टेलीविजन तक तो स्थिति ठीक थी, लेकिन उसके बाद की जब तकनीक के सहारे टीवी की दुनिया में चुपके से रील्स ने दखल देनी शुरू की तो स्थितियां बदलने लगीं। हर नई तकनीक की अपनी कुछ खासियत होती है और इसके साथ ही वह अपना चरित्र भी विकसित करती है। रील्स का जो चरित्र विकसित हुआ है, उसमें उथलापन ज्यादा है, गंभीरता कम है।

इसे समझने के लिए छापा यानी प्रेस से मीडिया तक की यात्रा को गंभीरता से देखना और समझना होगा। रेडियो के आविष्कार और फिर टेलीविजन के विस्तार के पहले तक पत्रकारिता की बुनियाद में छापेखाने ही रहे। शुरूआती दौर में पत्रकारिता को प्रेस इसी वजह से कहा गया। जब तक उसकी पहचान के साथ प्रेस जुड़ा रहा, उसके प्रति विशिष्टताबोध बना रहा। टेलीविजन के विस्तार और बजरिए इंटरनेट माध्यमों की आवाजाही ने इस विशिष्टाबोध युक्त पहचान को मीडिया में रूपांतरित कर दिया है। इस यात्रा में मोटे तौर पर पत्रकारिता के दो रूप दिखते हैं। स्वाधीनता आंदोलन की कोख से जन्मे छापे की पत्रकारिता कोख में मिले संस्कारों को अब तक कमोबेश अपनाए रखा है। बाद में आए रेडियो और टीवी में तकनीक भले ही प्रधान रहा,लेकिन उनके मूल में भी छापे की ही पत्रकारिता रही। इसके बावजूद तकनीक प्रधान और अत्याधुनिक माध्यम टीवी छापे की बुनियादी मूल्यों से काफी दूर दिखता है।

उदंत मार्तंड के प्रकाशक और संपादक जुगल किशोर शुक्ल हों या बंगाल गजट निकालने वाले जेम्स ऑगस्टस हिक्की, उन्हें अखबार निकालने का गहरा युगबोध था। लेकिन उन्हें पता था कि वह जो कार्य करने जा रहे हैं, वह बेहद दुष्कर है। उनके सामने संसाधनों की ही चुनौतियां ही नहीं थी, पाठक जुटाना और अपने छापे की बात उन तक पहुंचाना भी आसान नहीं था। उन्हें आभास था कि उनकी खरी बातों को तत्कालीन विदेशी सत्ता स्वीकार नहीं करेगी। संसाधनों के अभाव और सरकारी सहयोग नहीं मिलने की वजह से ही उदंत मार्तंड असमय कालकवलित हो गया। उसे संसाधन या सरकारी सहयोग इसलिए नहीं मिले, क्योंकि उसका स्वर भारतोन्मुखी था, वह हिंदी समाज के हित के हेत निकल रहा था, उसे भारतीय मूल्यों की चिंता थी और भारतीय समाज के नवजागरण में वह भागीदार बनना चाहता था। यह कहानी उदंत मार्तंड तक ही सीमित नहीं रही। बाद के दिनों में भी हिंदी में तमाम समाचार पत्र निकले और बंद होते रहे। इस लिहाज से कह सकते हैं कि हिंदी पत्रकारिता का इतिहास नवजागरण का ही इतिहास नहीं है, अखबारों के निकलने और बंद बंद होने के सिलसिले का भी इतिहास है। लेकिन इस सिलसिले में भी समानता दिखती है, पत्रों का मूल उद्देश्य भारतीय मूल्यों, स्वाधीन सोच के लिए जागरण पैदा करना और राष्ट्र हित पर खुद को तिरोहित करना ज्यादातर पत्रों के प्रकाशन के मूल में दिखता है। कह सकते हैं कि हिंदी पत्रकारिता के जीन यानी गुणसूत्र में तिरोहित होने का ही भाव रहा है। यही वजह है कि हिंदी पत्र खतरा उठाते हुए भारतीयता की बात करना और सार्वजनिक हित का सवाल उठाना अपना पुनीत कर्तव्य मानते रहे।

बेशक आज के समाचार पत्र भी सवालों के घेरे में हैं, लेकिन सवालों में आना सिर्फ अखबारी संस्थानों और उनके कर्ताधर्ताओं की सोच का ही मसला नहीं है, बल्कि उदारीकरण के बाद बढ़ी अर्थप्रधानता और पूंजी के खेल से उपजी मजबूरी भी है। फिर भी जब तुलनात्मक रूप से देखते हैं कि स्वाधीनता आंदोलन के साथ जिन मूल्यों को भारतीय समाज ने स्वीकार किया और आत्मसात किया है, उन्हें अब भी अखबारों ने ही आत्मसात कर रखा है। इनकी तुलना में टीवी की पत्रकारिता कहीं ज्यादा चंचल और चलायमान नजर आती है।

पत्रकारिता के जब भी नए माध्यम सामने आए, पुराने माध्यम के खात्मे की आशंका जताई जाती रही। हालांकि नए माध्यम के किंचित गुणों के साथ प्रतियोगिता और साम्यता बरतते हुए पुराने माध्यम ने जहां खुद को ज्यादा प्रतियोगी बनाया। हर नए माध्यम के अवतार और विकास के मूल में नई तकनीक रही है। तकनीक की एक विशेषता है, हर नई तकनीक हमेशा पुरानी के मुकाबले ज्यादा प्रभावी होती है। इस लिहाज से छापे के बाद आए रेडियो ने लोगों को ज्यादा लुभाया। लेकिन रेडियो के साथ प्रतियोगिता में छापे ने हार नहीं मानी और उसके बरक्स खुद को भी पहले तुलना में ज्यादा गतिमान बनाया, अपने कंटेंट और प्रस्तुति में विविधता और नवीनता की खोज की। इसके बाद अखबारों का प्रसार बढ़ा, रेडियो को तो वैसे ही अपनी नई तकनीक के चलते आगे बढ़ना ही था।

जब टेलीविजन ने मीडिया की दुनिया में अगले चरण के रूप में कदम रखा, दोनों पुराने माध्यमों के खात्मे की आशंका जताई जाने लगी। हालांकि कोई खत्म नहीं हुआ, रेडियो ने खुद के लिए नई तकनीक यानी फ्रीक्वैंसी मॉड्युला यानी एफएम की ईजाद कर ली और अपने लिए जीवन की नई राह खोज ली तो अखबारों ने अपने पन्ने टेलीविजन के पर्दे की तरह चमकादार और दृश्यवान बनाने लगे। अखबारों पर विजुअल का प्रभाव फोटो और चित्रों के विस्तार के रूप में दिखा। इसके असर से अखबार अब भी बचे हुए हैं, रेडियो भी जिंदा है और टेलीविजन भी विस्तृत हो चुका है। लेकिन जिसे हम टेलीविजन कहते हैं, जिसमें एक पर्दा होता है, उसे चुनौती रील्स और ऐसे ही शॉर्ट वीडियो माध्यमों से मिल रही है। टेलीविजन को पहले इंटरनेट से चुनौती मिली, लेकिन बाद के दिनों इंटरनेट ने खुद में मीडिया के हर फॉर्मेट को समाहित कर लिया। इसी बीच रील्स और टिकटैक जैसे शॉर्ट फॉर्मेट आ गए और टेलीविजन को भी चुनौती मिलने लगी।

मीडिया के शुरूआती दोनों माध्यम जहां मूल्यों और संघर्ष की कशमकश वाले दौर में पैदा हुए, पले और बढ़े, इसलिए उनके चरित्र पर मूल्यों और संघर्ष का असर दिखता है। लेकिन टेलीविजन का वैश्विक प्रसार आर्थिक उदारीकरण के दौर में हुआ है। इसलिए उसने उदारीकरण की विशेषताओं को भी आत्मसात कर लिया है। उदारीकरण की पहली शर्त चमक-दमक और शोशेबाजी है। भारतीय परिदृश्य में जब टेलीविजन माध्यम विकसित हो रहा था, तब हिंदी के गंभीर पत्रकारों ने इससे दूरी बनाए रखी। उन्होंने तब इसे दोयम दर्जे का माध्यम माना और उसकी उपेक्षा की। उन्हें ऐसा लगा कि यह गंभीर पत्रकारिता का माध्यम नहीं हो सकता।

विज्ञान में निर्वात का सिद्धांत है। यानी कोई भी जगह निर्वात नहीं रह सकती, उसकी जगह भरने के लिए नई हवा आ ही जाती है। यह सिद्धांत हर जगह लागू होता है। टीवी की दुनिया से गंभीर लोगों ने दूरी बनाई तो उनकी जगह भरने के लिए वे सारे लोग आ गए, जिन्हें मुख्यधारा की पत्रकारिता स्वीकार नहीं कर रही थी। इसका असर यह हुआ कि उन्होंने गंभीरता की बजाय दृश्यों के लिए माकूल नाटकीयता को अपनाया, उन्होंने पत्रकारिता के बुनियादी मूल्यों की बजाय पारसी नौटंकी शैली की संवाद अदायगी और नाटकीयता पर जोर दिया। आज यह नाटकीयता ही भारतीय टेलीविजन की मुख्यधारा है। हालांकि जिन देशों में टीवी भारत की तुलना में कहीं ज्यादा विकसित हुआ, जहां उसका आविष्कार हुआ, वहां टेलीविजन की पत्रकारिता पर छापे की पत्रकारिता जैसी गंभीरता दिखती है, वहां के खबरिया टीवी के पर्दे नाटकीयता से युक्त नहीं हैं। भारतीय परिदृश्य में एक और तथ्य को भी याद रखा जाना चाहिए। टीवी में बड़ी पूंजी लगती है, इसलिए इस पूंजी की वापसी की गारंटी भी चाहिए होती है, नाटकीयता इस वापसी की गारंटी देती प्रतीत होती है। इसलिए यह नाटकीयता बढ़ी हुई है। इस विकास के मूल में आर्थिक उदारीकरण के साथ आए जीवन मूल्य भी हैं। आर्थिक फायदे के चलते इस माध्यम ने सनसनी को भी हथियार बना लिया है। चूंकि यह दृश्य प्रधान माध्यम है, इसलिए यहां गंभीरता और गुणों पर नहीं, खूबसूरत और प्रभावी दृश्यों पर जोर है। रील्स ने इसे और बढ़ावा ही दिया है। जहां लटके-झटके भी हैं और हल्की सोच भी।

विजुअल छापे की तुलना में हमेशा ज्यादा प्रभावी होते हैं, अगर वे चलायमान हैं तो उनकी प्रभावोत्पादकता की गति भी बढ़ जाती है। इन गुणों के चलते इस माध्यम का प्रभाव ज्यादा है, उसमें त्वरा है, इसलिए सिनेमा से लेकर खेल और राजनीति तक की दुनिया इसकी ओर खिंची जा रही है। जब तक भारतीय राजनीति पर स्वाधीनता आंदोलन की कोख से निकली सियासी ताकतों का दबदबा था, उथलापन उसे अस्वीकार्य था। तब दिखावे के लिए ही सही, राजनीति को गंभीर, विचारवान और संजीदा कारक पसंद थे। राजनीति के लिए शोशेबाजी और नाटकीयता त्याज्य विषय थे। लेकिन उदारीकरण के बाद राजनीति ने भी नए मूल्यों को ग्रहण कर लिया है। इसका असर उसकी मीडिया समझ और उसके इस्तेमाल पर भी दिखता है। टेलीविजन की पत्रकारिता ने शब्दों का आडंबर रचने में महारत हासिल कर ली है, शोर-शराबा उसकी विशेषता बन चुकी है और इस शोर में मुद्दे कहीं खो चुके हैं।

इसीलिए आज राजनीति की भी पहली पसंद, शोशेबाज, नाटकीय और त्वरा वाला टेलीविजन माध्यम और उसका विस्तार रील्स बन चुका है। एक कहावत है, नाचे गावे तूरे ताने, वाके दुनिया राखे मान। तो इस दौर में इस तान छेड़ने वाले माध्यम का चहुंओर बोलबाला है। आज मीडिया का मतलब टीवी तक सिमट गया है। राजनीति इसे खूब बढ़ावा भी दे रही है। लेकिन यह भी सच है कि जब राजनीति को गंभीर बात कहनी होती है तो उसे अखबार ही याद आते हैं, विशेषकर उसके संपादकीय पृष्ठ। आजकल यह खूब दिख रहा है।

देवबंद से जुड़े मोहाली बम साजिश के तार, ग्राम प्रधान का भाई गिरफ्तार, पाकिस्तानी कनेक्शन की जांच

आर्यावर्त संवाददाता

देवबंद/सहारनपुर। सहारनपुर के देवबंद क्षेत्र का नाम मोहाली बम साजिश मामले की जांच में सामने आने के बाद सुरक्षा एजेंसियां सक्रिय हो गई हैं। पंजाब पुलिस की स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल और उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधक दस्ते की संयुक्त कार्रवाई में देवबंद क्षेत्र के बचीटी गांव निवासी मोहम्मद मोहतसीम को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार युवक वर्तमान ग्राम प्रधान का भाई बताया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार पंजाब के मोहाली स्थित वाईपीएस चौक फेज-7 क्षेत्र से सुरक्षा एजेंसियों ने पहले तीन संदिग्धों को गिरफ्तार किया था। उनके कब्जे से विस्फोटक सामग्री, डेटोनेटर, बैटरी, तार और विस्फोटक उपकरण तैयार करने में प्रयुक्त अन्य सामग्री बरामद की गई थी। मामले में

मोहाली में प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। पूछताछ के दौरान गिरफ्तार आरोपियों में शामिल मनी सिंह ने देवबंद क्षेत्र के मोहम्मद मोहतसीम का नाम लिया। इसके बाद जांच का दायरा सहारनपुर तक बढ़ाया गया।

सोशल मीडिया के जरिए हुआ संपर्क

जांच एजेंसियों के अनुसार मनी सिंह और मोहतसीम के बीच संपर्क सोशल मीडिया माध्यमों से स्थापित हुआ था। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि दोनों की पहचान कथित रूप से पाकिस्तान में बैठे गैंगस्टर शहजाद भट्टी के जरिए कराई गई थी। एजेंसियों को दोनों के बीच लगातार संपर्क के कुछ डिजिटल साक्ष्य मिलने की बात भी सामने आई है।

आतंकवादी गतिविधियों में भूमिका की जांच

सुरक्षा एजेंसियां इस बात की भी जांच कर रही हैं कि संदिग्धों ने किसी आतंकी नेटवर्क को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई थी या नहीं। जांच के दौरान यह पहलू भी खंगाला जा रहा है कि व्हाट्सएप ओटीपी और अन्य डिजिटल माध्यमों का इस्तेमाल किसी अवैध गतिविधि के लिए तो नहीं किया गया। हालांकि जांच एजेंसियों की ओर से अभी तक इस संबंध में कोई अंतिम निष्कर्ष सार्वजनिक नहीं किया गया है।

संयुक्त कार्रवाई में हुई गिरफ्तारी

सूचना मिलने के बाद पंजाब पुलिस की टीम देवबंद पहुंची और स्थानीय स्तर पर उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधक दस्ते की सहायता से कार्रवाई की गई। संयुक्त अभियान के दौरान मोहतसीम को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की गई। सुरक्षा एजेंसियां मामले से जुड़े अन्य संभावित संपर्कों और नेटवर्क की भी जांच कर रही हैं।

थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने किए रामलला और हनुमानगढ़ी के दर्शन, पूजा-अर्चना की

आर्यावर्त संवाददाता

अयोध्या। भारतीय सेना के चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ एवं थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी शुक्रवार को अयोध्या पहुंचे। वह सेना के विशेष हेलीकॉप्टर से श्रीराम कथा हेलीपैड पर उतरे, जहां प्रशासनिक एवं सैन्य अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। हेलीपैड से जनरल द्विवेदी सीधे हनुमानगढ़ी पहुंचे और संकटमोचन हनुमान जी के दर्शन-पूजन कर देश की सुख-समृद्धि एवं सुरक्षा के लिए प्रार्थना की। इसके बाद उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि परिसर पहुंचकर रामलला के दिव्य दरबार में माथा टेका और विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। थल सेना प्रमुख के आगमन को लेकर हनुमानगढ़ी और राम जन्मभूमि परिसर में सुरक्षा के विशेष प्रबंध किए गए थे। उनके दौरे के दौरान पुलिस, प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारी पूरी तरह मुस्तैद रहे।

सरकार के नीतियों के खिलाफ सपा का धरना-प्रदर्शन

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। समाजवादी पार्टी ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट परिसर में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पेपर लीक तथा कथित फर्जी एनकाउंटर जैसे मुद्दों को लेकर धरना-प्रदर्शन कर सरकार की नीतियों को जनविरोधी बताते हुए विरोध दर्ज कराया। धरने को संबोधित करते हुए सपा नेताओं ने कहा कि प्रदेश और देश में लगातार बढ़ रही महंगाई ने आम जनता का जीना मुश्किल कर दिया है। खाद्य पदार्थों, रसोई गैस, पेट्रोल-डीजल तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दाम लगातार बढ़ रहे हैं, जिससे गरीब और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार महंगाई पर नियंत्रण पाने में पूरी तरह विफल साबित हुई है।वक्ताओं ने बेरोजगारी के मुद्दे को प्रमुखता से उठाते हुए कहा कि प्रदेश का युवा रोजगार के लिए दर-दर भटकने को मजबूर है। सरकारी विभागों में रिक्त पदों पर भर्ती नहीं की जा रही है और जो भर्तियां निकलती हैं, उनमें भी अनियमितताओं तथा पेपर लीक की घटनाओं के कारण युवाओं का भविष्य अंधकारमय हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बार-बार लीक होने से लाखों अभ्यर्थियों की मेहनत पर पानी फिर रहा है और युवाओं का सरकार से विश्वास उठता जा रहा है।सपा नेताओं ने प्रदेश में बढ़ते भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था की स्थिति पर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार व्याप्त है, जिससे आम जनता को न्याय पाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही उन्होंने प्रदेश में हुए कथित फर्जी एनकाउंटरों की निष्पक्ष और न्यायिक जांच कराए जाने की मांग उठाई। सपा के जिलाध्यक्ष राकेष मौर्य, मुंगराबादशाहपुर विधायक पंकज पटेल, मल्हनी विधायक लकी यादव, मछलीशहर विधायक डॉक्टर रागिनी सोनकर, पूर्व विधायक मड़ियाहू श्रद्धा यादव,पूर्व मंत्री शैलेंद्र यादव, डॉ अवध नाथ पाल,निर्भय नारायण पटेल, रजनीश मिश्रा,संजय सरोज आदि उपस्थित रहे।

सड़क हादसे में प्रधानाचार्य की मौत

जौनपुर। मछलीशहर कस्बे से सटे गुजराती राम अभिलाष पब्लिक स्कूल सरायचंदन के प्रधानाचार्य नीरज सरोज की सड़क हादसे में मौत हो गई है। वे प्रयागराज के नैनी परीक्षा केंद्र में टीजीटी परीक्षा देकर घर लौट रहे थे, तभी बाबूगंज बाजार में उनकी बाइक पलट गई। बताते है कि नीरज सरोज सिकरारा थाना क्षेत्र के कुरनी (चेरईकापुरा) के निवासी थे और पिछले सात वर्षों से उक्त विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने माध्यमिक शिक्षा चयन आयोग की टीजीटी परीक्षा का फॉर्म भरा था और गुरुवार को इसी परीक्षा में शामिल होने के लिए बाइक से नैनी गए थे। विद्यालय के प्रबंधक श्याम नारायण बिंद ने बताया कि परीक्षा देकर घर लौटते समय एक साइकिल सवार को बचाने के प्रयास में नीरज सरोज की बाइक अनियंत्रित होकर पलट गई। इस दुर्घटना में उन्हें गंभीर चोटें आईं, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर फूलपुर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

बदायूं में मेंथा प्लांट में जहरीली गैस बनी काल : टंकी सफाई के दौरान दो सगे भाइयों की मौत, तीसरे की हालत गंभीर

आर्यावर्त संवाददाता

बदायूं । फैजगंज बेहटा थाना क्षेत्र के सुरेनी पापड़ी गांव में शुक्रवार सुबह एक दर्दनाक हादसे ने पूरे गांव को झकझोर कर रख दिया। मेंथा प्लांट की टंकी की सफाई के दौरान दम घुटने से दो सगे भाइयों की मौत हो गई, जबकि तीसरे भाई की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसे के बाद परिवार में कोहराम मच गया और गांव में शोक की लहर दौड़ गई।

जानकारी के अनुसार, सुरेनी पापड़ी गांव निवासी जयवीर यादव (32 वर्ष), राजेश यादव (22 वर्ष) और मनवीर यादव (26 वर्ष) मेंथा प्लांट की टंकी की सफाई कर रहे थे। बताया जाता है कि टंकी के अंदर जहरीली गैस भरी हुई थी। सफाई के दौरान सबसे पहले एक भाई की हालत बिगड़ी और वह टंकी के भीतर बेहोश होकर गिर पड़ा। उसे बचाने के प्रयास में अन्य दोनों भाई भी टंकी के अंदर उतर गए, लेकिन गैस के प्रभाव से वे भी अचेत हो गए। कुछ ही देर बाद मौके पर मौजूद लोगों ने शोर मचाया तो आसपास के ग्रामीण दौड़कर पहुंचे। ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद तीनों भाइयों को टंकी से बाहर निकाला और तत्काल एंबुलेंस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आसफपुर पहुंचाया।

चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद जयवीर यादव और राजेश यादव को मृत घोषित कर दिया, जबकि गंभीर रूप से अचेत मनवीर यादव को प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। उसकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है तथा हादसे के कारणों की जांच शुरू कर दी है। एक ही परिवार के दो युवकों की मौत से गांव में मातम पसरा हुआ है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। ग्रामीणों के अनुसार तीनों भाई मेहनत-मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते थे। अचानक हुए इस हादसे ने पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है।

बिना सुरक्षा उपकरण उतरे थे टंकी में

ग्रामीणों का कहना है कि मेंथा प्लांट की टंकियों में सफाई के दौरान अक्सर जहरीली गैस जमा हो जाती है। ऐसे कार्यों में सुरक्षा उपकरणों और ऑक्सीजन की व्यवस्था जरूरी होती है, लेकिन अधिकांश स्थानों पर इन मानकों का पालन नहीं किया जाता। आशंका जताई जा रही है कि टंकी में मौजूद जहरीली गैस के कारण ही तीनों भाई बेहोश हुए, जिससे यह बड़ा हादसा हो गया।

परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़

एक ही घर के दो बेटों की मौत और तीसरे की गंभीर हालत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। गांव में शोक का माहौल है और बड़ी संख्या में लोग पीड़ित परिवार को ढांढस बंधाने पहुंच रहे हैं।

जल, जंगल जमीन संस्कृति की आधारशिला

जौनपुर। पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के पर्यावरण विज्ञान विभाग के समर ट्रेनिंग छात्रों ने रूरल कलीचाबाग स्थित जल कल विभाग में मिशन लाइफ के अंतर्गत पर्यावरण दिवस 2026 ष्इंस्पायर बाय नेचररू फॉर क्लाइमेट, फॉर आवर फ्यूचरष पर कार्यक्रम आयोजित कर पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन का स्वरूप देने का आह्वान किया। सहायक आचार्य डॉ. विवेक कुमार पाण्डेय ने कहा कि जल, जंगल और जमीन केवल संसाधन नहीं बल्कि हमारी संस्कृति व सभ्यता की आधारशिला हैं। उन्होंने बढ़ते तापमान, घटते भूजल स्रोत, वायु प्रदूषण व जैव विविधता क्षरण पर चिंता जताते हुए जल संरक्षण, जल संचयन, भूजल पुनर्भरण तथा प्राकृतिक जल स्रोतों व आर्द्रभूमियों के संरक्षण पर विशेष जोर दिया। डॉ. पाण्डेय ने नदियों की स्वच्छता को पर्यावरण संरक्षण का महत्वपूर्ण स्तंभ बताया और भारतीय संस्कृति में नदियों व वनों को मां व देवता रूप में पूजने का महत्व रेखांकित किया।

बच्चों के सामने पत्नी को मार डाला, ईंट और हथियार से किए वार, छह साल पहले किया था प्रेम विवाह

आर्यावर्त संवाददाता

मैनाठेर (मुरादाबाद)। मैनाठेर थाना क्षेत्र के गांव रसूलपुर हमीर में शुक्रवार सुबह विवाद के बाद युवक ने कथित तौर पर पत्नी की धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी। घटना के समय घर में दंपती के तीन छोटे बच्चे मौजूद थे। वारदात के बाद आरोपी पति मौके से भाग गया।

उसके ससुरालियों ने दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है। गांव निवासी सना (25) का करीब छह वर्ष पहले गांव के ही नसीम से प्रेम विवाह हुआ था। दोनों के तीन बच्चे हैं। शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे घर में किसी बात को लेकर विवाद हुआ।

आरोप है कि इसके बाद नसीम ने सना पर धारदार हथियार से ताबड़तोड़ वार कर दिए। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतका का मायका घटनास्थल से करीब 100 मीटर की दूरी पर है।

बताया गया कि वारदात के बाद सना की छह वर्षीय बेटी आयत दौड़कर अपनी नानी के घर पहुंची और घटना के बारे में बताया।

सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुंचे, लेकिन तब तक आरोपी फरार हो चुका था। परिजनों के अनुसार नसीम ट्रक चालक है और तीन दिन पहले काम पर गया था। वह बृहस्पतिवार देर शाम ही ट्रक लेकर गांव लौटा था। मृतका के पिता इमरान का आरोप है कि नसीम उनकी बेटी को लंबे समय से दहेज के लिए प्रताड़ित करता था।

उन्होंने पुलिस को दिए शिकायती पत्र में आरोप लगाया है कि दहेज की मांग पूरी न होने पर उनकी बेटी की हत्या की गई है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि घटना में तीन अन्य लोगों की भी भूमिका हो सकती है।

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। पुलिस का कहना है कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच की जाएगी। फरार आरोपी की तलाश के लिए टीमें लगाई गई हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सूखते जल स्रोत और घटती छांव पर उठाई आवाज

जौनपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सोशल फोरम के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने शुक्रवार को जिलाधिकारी को संबोधित ज्ञापन सौंपकर जनपद में बढ़ते पर्यावरणीय संकट, सूखते जल स्रोतों और घटती हरियाली पर चिंता व्यक्त की। संगठन ने जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों को देखते हुए प्रशासन से ठोस और दीर्घकालिक कदम उठाने की मांग की।ज्ञापन में कहा गया है कि जौनपुर में पिछले कुछ वर्षों के दौरान भीषण गर्मी, अनियमित वर्षा, गिरते भूजल स्तर और सिकुड़ते पारंपरिक जल स्रोत पर्यावरणीय संकट का संकेत हैं। कभी जल संचयन और जैव विविधता के केंद्र रहे कई तालाब, पोखरे और जलाशय आज अतिक्रमण, प्रदूषण और उपेक्षा का शिकार हैं। नगर में छायादार वृक्षों की कमी का मुद्दा उठाया। ज्ञापन में कहा गया कि शहर की अधिकांश प्रमुख सड़कों के किनारे ऐसे वृक्ष नहीं हैं जो राहगीरों को गर्मी से राहत दे सकें।

54 दिव्यांगजनों को वितरित किया ट्राइसाइकिल

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 54वें जन्मदिवस एवं विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्था परिश्रम द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्था के अध्यक्ष कृपाशंकर सिंह एवं सचिव एडवोकेट अखिलेश चैबे के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में 54 दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिल तथा 54 छात्राओं को साइकिल वितरित की गई। साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए अतिथियों ने एक पेड़ मा के नाम लगाकर पौधरोपण किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व सांसद के.पी. सिंह ने कहा कि यह कार्य समाज के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्मदिवस को जनसेवा और पर्यावरण संरक्षण से जोड़ना एक सराहनीय पहल है। इससे समाज में सेवा, सहयोग और संवेदनशीलता का संदेश जाता है।संस्था

के अध्यक्ष कृपाशंकर सिंह ने कहा कि संस्था का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुंचाना है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का संकल्प लेने का आह्वान किया।कार्यक्रम के समापन पर देशभक्ति गीतों की मधुर धुनों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा। डीजे पर बज रहे राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत गीतों के बीच दिव्यांगजन अपनी नई ट्राइसाइकिलों पर तथा छात्राएं अपनी साइकिलों के साथ एक कतार में आगे बढ़ती दिखाई दीं। यह दृश्य उपस्थित लोगों के लिए अत्यंत भावुक और प्रेरणादायक रहा। पूरे परिसर में उत्साह, सेवा भावना और सामाजिक समरसता का अद्भुत संगम देखने को मिला। पूर्व मंत्री जगदीश सोनकर,भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत प्रजापति, सुरेंद्र प्रताप सिंह पूर्व विधायक,हरेन्द्र प्रसाद सिंह पूर्व विधायक जफराबाद,सुषमा पटेल पूर्व विधायक, प्रदेश प्रवक्ता ओमप्रकाश सिंह,आदि सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

ग्रीन कैफे महिलाओं की आय बढ़ाने में मददगार

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन योजना के अंतर्गत विकास भवन परिसर में स्थापित उन्नति ग्रीन कैफे का शुभारंभ प्रदेश के ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है। उन्नति ग्रीन कैफे रोजगार सृजन के साथ-साथ महिलाओं की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। राज्यसभा सांसद सीमा द्विवेदी जिलाधिकारी सैमुअल पॉल एन. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह, मुख्य विकास अधिकारी ध्रुव खड़यि, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के डिप्टी कमिश्नर जितेंद्र प्रताप सिंह तथा जिला मिशन प्रबंधक

गुलाब चंद सरोज सहित विकास भवन के विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कैफे का निरीक्षण कर वहां उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की तथा स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा संचालित इस पहल की सराहना की। अधिकारियों ने बताया कि उन्नति ग्रीन कैफे के माध्यम से स्वच्छ, गुणवत्तापूर्ण एवं किफायती खाद्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे समूहों की महिलाओं को स्थायी रोजगार और आय का स्रोत प्राप्त होगा।

बाबा धाम व सात घाटों पर 58% भक्त बोलते हैं 24 भाषाएं, 42 % हिंदी वाले, 37% ही समझ पाते हैं संस्कृत

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। काशी में आने वाले दर्शनार्थियों की भाषाई विविधता कई देशों से ज्यादा है। काशी विश्वनाथ मंदिर, दशाश्वमेध घाट और अस्सी सहित काशी के आठ पवित्र स्थलों पर हर दिन 25 भाषाएं बोलने वाले दर्शन-पूजन, आरती और गंगा विहार के लिए आते हैं। इनमें से सिर्फ 42 फीसदी श्रद्धालु ही हिंदी भाषी हैं जबकि बाकी 24 तरह की भाषाएं बोलते हैं। इनमें से छह फीसदी विदेशी भाषाओं के सैलानी हैं।

बीएचयू के डीएवी पीजी कॉलेज की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. महिमा सिंह और उनकी शोध टीम की ओर से किए गए अध्ययन में ये आंकड़े सामने आए हैं। ये रिसर्च आईसीसीएसआर के एक मेगा प्रोजेक्ट के तहत किया गया है।

काशी के आठ पवित्र जगहों में

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के गेट संख्या चार, गंगा द्वार स्थित ललिता घाट, त्रिपुर भैरव घाट, मान मंदिर घाट, दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट और अस्सी घाट पर आए भक्तों पर अध्ययन कर ये आंकड़े निकाले गए हैं।

जर्मन, जैपनीज, इटैलियन और स्पैनिश बोलने वाले

विदेशी भाषाई सैलानियों में तीन फीसदी फ्रेंच, नेपाल व इटैलियन के दो फीसदी और जर्मन, जैपनीज व स्पैनिश बोलने वाले श्रद्धालुओं की संख्या एक फीसदी है। भारतीय भाषाओं में सबसे ज्यादा सात फीसदी तमिल, छह फीसदी तेलुगु और बंगाली, पांच फीसदी मराठी, भोजपुरी, मैथिली और मलयालम के तीन-तीन फीसदी, मारवाड़ी, अंग्रेजी, कन्नड़ और कोकबोरोक (त्रिपुरी) भाषा के दो-दो फीसदी भक्त आते हैं। वहीं बुंदेली, बघेली, असमिया, अवधी, झारखंड के खोर्था, गुजराती, पंजाबी भाषा के भक्तों की संख्या एक-एक फीसदी है। इस अध्ययन में उन्होंने काशी की लोक संस्कृति और आध्यात्म आधारित विविधता का पता लगाया है। इसे मापने के लिए इन्होंने ग्रीनबर्ग नियम का इस्तेमाल किया है।

37 भक्त ही समझ पाते हैं संस्कृत

इस अध्ययन में 12 फीसदी विदेशी नागरिक और 88 फीसदी भारतीय श्रद्धालु शामिल हैं। समूह में 37 फीसदी भक्तों को ही संस्कृत समझ में आती है। 89.8 फीसदी भारतीयों को अंग्रेजी समझ में आती है। वहीं, 10.2 फीसदी आबादी को अंग्रेजी नहीं आती। अंग्रेजी समझने वाले 89.8 फीसदी लोगों में से 80.7 फीसदी लोग अंग्रेजी बोल भी सकते हैं। 88 फीसदी भारतीयों में से 15.3 फीसदी लोग जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, अरबी और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं समझते हैं।

40 लाख का मिला है प्रोजेक्ट

प्रोजेक्ट निदेशक डॉ. महिमा सिंह ने बताया कि उनका प्रोजेक्ट काशी विश्वनाथः कलात्मकता और लोकप्रिय स्मृति मेंः सांस्कृतिक कॉरिडोर की कला, शिल्प और लोक प्रथाओं का एक अध्ययन के नाम से है। इसे आईसीएसएसआर, नई दिल्ली की ओर से वित्त पोषित किया गया है। इसके लिए 40 लाख रुपये का फंड दिया गया है। इस अध्ययन में शुभम कुमार, श्रीयुक्त बसनेत शामिल रहे।

ग्लोइंग और जवां त्वचा चाहिए? एएचए को स्किनकेयर रूटीन में शामिल करने के 5 फायदे

स्किन को हेल्दी और ग्लोइंग बनाने के लिए आजकल कई इंग्रिडियंट्स वायरल हो रहे हैं, जिसमें से एक है एएचए यानी अल्फ़ा हाइड्रोक्सी एसिड। चलिए इस आर्टिकल में जानते हैं ये क्या होता है और स्किन पर कैसे काम करता है। साथ ही इसे स्किनकेयर रूटीन में शामिल करने के 5 फायदे कौन से हैं।

क्या आपने कभी सोचा है कि अच्छा स्किनकेयर करने के बाद भी हमारी स्किन डल और डेड क्यों नजर आती है? इसकी वजह एएचए यानी अल्फ़ा हाइड्रोक्सी एसिड की कमी हो सकती है। ये एक ऐसा स्किनकेयर इंग्रिडियंट है जो स्किन को फ्रेश और रेडियंट बनाने में मदद करता है। अगर आप अपनी स्किन का टेक्सचर बदलना चाहते हैं, हेल्दी बनाना चाहते हैं तो अपनी स्किनकेयर रूटीन में एएचएको शामिल कर सकते हैं। आजकल ये काफी ज्यादा ट्रेंड में भी है और कई प्रोडक्ट्स में शामिल किया जा रहा है।

आजकल स्किनकेयर की दुनिया में अल्फा हाइड्रॉक्सी एसिड (एएचए) तेजी से पॉपुलर भी हो रहा है। ब्यूटी एक्सपर्ट्स और डर्मेटोलॉजिस्ट्स का मानना है कि यह एक ऐसा इंग्रीडिएंट है जो त्वचा की ऊपरी परत से डेड स्किन को हटाकर उसे ज्यादा साफ, चमकदार और मुलायम बनाने में मदद कर सकता है। आइए जानते हैं इसे स्किनकेयर में शामिल करने के 5 फायदे।

क्या होता है अल्फ़ा हाइड्रोक्सी एसिड (एएचए)?

सबसे पहले जान लेते हैं कि अल्फ़ा हाइड्रोक्सी एसिड (एएचए) होता क्या है। दरअसल ये एक ऐसा ग्रुप होता है, जो आमतौर पर फलों, दूध और गन्ने जैसे स्रोतों से प्राप्त किया जाता है। एक्सपर्ट के अनुसार, एएचए त्वचा से जुड़ी कई समस्याओं में सुधार करने की क्षमता रखता है।यही कारण है कि आजकल इसका इस्तेमाल फेसवॉश, टोनर, सीरम और केमिकल पील जैसे कई स्किनकेयर प्रोडक्ट्स में किया जाता है।

एएचए पानी में घुलनशील होता है और मुख्य रूप से त्वचा की ऊपरी सतह पर काम करता है। इसका सबसे बड़ा काम त्वचा को एक्सफोलिएट करना यानी डेड स्किन को हटाना है। इससे नई और हेल्दी त्वचा सतह पर आती है, जिससे चेहरा ज्यादा साफ, मुलायम और चमकदार दिखाई देता है। एएचए के सबसे लोकप्रिय प्रकारों में ग्लाइकोलिक एसिड, लैक्टिक एसिड और साइट्रिक एसिड शामिल हैं।

एएचए को स्किनकेयर में शामिल करने के फायदे

स्किन को एक्सफोलिएट करना- एएचए स्किन की डेड स्किन को हटाने में काफी मददगार है। इसे रोजाना अपनी स्किनकेयर रूटीन में शामिल करने के स्किन स्मूद और फ्रेश नजर आती है। अगर आपकी स्किन डल और डैमेज है तो एएचए फायदेमंद साबित हो सकता है।

रंगत को निखारे- अगर रोजाना आप एएचए का इस्तेमाल करते हैं तो ये स्किन की रंगत निखारने में मदद करता है। ये स्किन को इवेन बनाता है और फेस को फ्रेश लुक देता है।

स्किन का टेक्सचर इंप्रूव करे- अगर आप अनइवेन स्किन टेक्सचर या फिर माइल्ड एक्ने स्कार्स से जूझ रहे हैं तो एएचए इसमें फायदेमंद हो सकता है। ये स्किन को स्मूद करता है और सेल्ट को प्रोमोट करने में भी हेल्पफुल है।

फाइन लाइंस कम करे- एएचए कोलेजन प्रोडक्शन को बढ़ाने में भी मददगार है। इससे चेहरे के डार्क स्पॉट कम होते हैं। पिगमेंटेशन कम होती है और एजिंग साइन भी समय के साथ कम होने लगते हैं।

एक्ने और पोर्स कम करे- एएचए स्किन से एक्सट्रा ऑयल और डेड स्किन को रीमूव करने में मदद करता है। साथ ही ये पोर्स को बंद करने, ब्रेकआउट को कम करने और ओवरऑल स्किन को ठीक करने में मदद करता है।

अगर आप भी सुबह बिना ब्रश किए पीते हैं पानी तो जान लें ये जरूरी बात

क्या आप भी सुबह उठकर बिना ब्रश किए सबसे पहले पानी पीते हैं। अगर हां तो कितना। दरअसल, बहुत से लोग सुबह उठकर खाली पेट खूब सारा पानी पीते हैं। उनका मानना है कि इससे शरीर की गंदगी बाहर निकलती है। डॉक्टर्स का कहना है कि एक दिन में कम से कम 10-12 ग्लास पानी पीना चाहिए लेकिन क्या ब्रश ब्रश किए बिना पानी पीना चाहिए या इससे कोई नुकसान है।

सुबह बिना ब्रश पानी पीना चाहिए या नहीं

सुबह-सुबह पानी पीने से सेहत अच्छी बनी रहती है। इससे पूरे दिन आपका शरीर हाइड्रेटेड रहता है। ऐसा करने से पेट से जुड़ी समस्याएं नहीं होती है। आपकी स्किन हमेशा चमकदार बनी रहती है।

हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि बिना ब्रश किए पानी पीना फायदेमंद होता है। इससे पाचन शक्ति मजबूत होती है। इसके अलावा दिन में जो कुछ भी खाते-पीते हैं, वह आसानी से पच जाता है। सुबह ब्रश करने से पानी पीने से शरीर कई बीमारियों से बच जाता है।

सुबह उठकर बिना ब्रश किए खाली पेट अगर पानी पीते हैं तो रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यूनिटी काफी ज्यादा स्ट्रॉन्ग हो जाती है। आप जल्दी से सर्दी, खांसी, जुकाम की चपेट में नहीं आते हैं और कई सारी बीमारियां शरीर से दूर ही रहती हैं।

लंबे, घने बाल और ग्लोइंग स्किन के लिए सुबह ब्रश करने से पहले पानी पीना फायदेमंद होता है। इससे पेट की हर समस्या का खात्मा भी हो सकता है। कब्ज, कच्ची डकार, मुंह के छाले से भी निजात मिलती है।

हाई ब्लड प्रेशर और शुगर के मरीजों के सुबह ब्रश से पहले पानी पीना चाहिए। ऐसा करने से उनका बीपी कंट्रोल रहता है। इस आदत से मोटापा भी नहीं होता है और वेट में मेंटेन रहता है।

मुंह से बदबू आती है तो सुबह उठकर एक गिलास गुनगुना पानी पीना फायदेमंद हो सकता है। दरअसल, रात में सोते समय मुंह में सलाइवा की कमी हो जाती है, जिससे मुंह सूख जाता है और कई तरह के बैक्टीरिया पैदा हो जाते हैं, इससे मुंह बदबू करने लगता है। ऐसे में सुबह उठकर एक गिलास गुनगुना पानी पीने से यह समस्या समाप्त हो जाएगी।

बार-बार गिर जाती हैं आपकी नकली आईलैशेस? जानिए ऐसा होने के कुछ संभावित कारण

नकली आईलैशेस का इस्तेमाल पलकों को घना और आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है। हालांकि, कई बार महिलाएं इस समस्या का सामना करती हैं कि उनकी नकली आईलैशेस बार-बार गिर जाती हैं। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। इस लेख में हम कुछ प्रमुख कारणों पर चर्चा करेंगे, जिनसे आपकी नकली आईलैशेस बार-बार गिर सकती हैं। इन्हें जानकर आप आगे से सावधानी बरत सकेंगी और सुंदर दिख सकेंगी।

गलत गोंद का इस्तेमाल

नकली आईलैशेस लगाने के लिए सही गोंद का चयन बहुत जरूरी है। अगर आप सस्ती और घटिया गुणवत्ता की गोंद का इस्तेमाल करेंगी तो आपकी फेक आईलैशेस जल्दी गिर सकती हैं। हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाली गोंद का चयन करें, जो लंबे समय तक टिक सके। इसके अलावा गोंद को सही मात्रा में लगाना भी जरूरी है, ताकि आपकी नकली आईलैशेस अच्छी तरह से चिपकी रहें और जल्दी न गिरें। गोंद को हमेशा आईलैश पर ही लगाएं।

सही तरीके से लगाना

नकली आईलैशेस को सही तरीके से लगाने पर उनका टिकना आसान होता है। अगर आप उन्हें सही जगह पर नहीं लगाती हैं या बहुत ज्यादा गोंद लगाती हैं तो वे जल्दी गिर सकती हैं। इसलिए, हमेशा ध्यान रखें कि नकली आईलैशेस को सही जगह पर और सही मात्रा में गोंद लगाकर लगाएं, ताकि वे अच्छी तरह से चिपकी रहें। इसके अलावा आईलैशेस को लगाने से पहले अपनी आंखों को साफ और सूखा रखें, ताकि गोंद बेहतर तरीके से चिपके।

हटाते समय ध्यान रखें

नकली आईलैशेस को हटाते समय भी सावधानी बरतनी चाहिए। अगर आप उन्हें जोर-जोर से खींचती हैं तो इससे आपकी असली आईलैशेस भी प्रभावित हो सकती हैं और आपकी नकली आईलैशेस भी टूट सकती हैं। इसलिए, हमेशा धीरे-धीरे और ध्यानपूर्वक फेक आईलैशेस को हटाएं। इसके अलावा आप आईलैशेस हटाने के लिए खासतौर पर बनाए गए प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल कर सकती हैं, जो उन्हें आसानी से हटाने में मदद करेंगे और आपकी असली आईलैशेस को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।

मौसम का असर

मौसम का भी आपकी नकली आईलैशेस पर असर पड़ सकता है। गरमी या बारिश होने पर पसीना या नमी के कारण गोंद कमजोर हो सकती है, जिससे आपकी नकली आईलैशेस गिर सकती हैं। इसलिए, मौसम के अनुसार अपने मेकअप रूटीन में बदलाव करें और जरूरत पड़ने पर गोंद को फिर से लगाएं। इसके अलावा बारिश के दिनों में पानी से बचाव करने वाली गोंद का इस्तेमाल करें, ताकि आपकी नकली आईलैशेस लंबे समय तक टिकी रहें और गिरें नहीं।

सफाई का ख्याल रखें

आंखों की सफाई बहुत जरूरी होती है। अगर आपकी आंखें गंदी होंगी या उन पर ज्यादा नमी होगी तो नकली आईलैशेस अच्छे से चिपक नहीं पाएंगी और जल्दी गिर सकती हैं। इसलिए, अपनी आंखों को अच्छी तरह से साफ करें और उन पर तेल या गंदगी न रहने दें। इसके अलावा आप आईलैशेस लगाने से पहले आखों पर हल्का-सा पाउडर लगा सकती हैं, ताकि वे बेहतर तरीके से चिपके रहें और जल्दी न गिरें।

सब्जियों के छिलके और बची चायपत्ती फेंकने की न करें भूल, किचन वेस्ट से तैयार होगा 'काला सोना'

हम सभी के घरों में रोजाना सब्जियों के छिलके, फलों के टुकड़े और बची हुई चायपत्ती कूड़े में फेंक दी जाती है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि जिसे आप कचरा समझ रहे हैं, वह असल में आपके पौधों के लिए किसी खजाने से कम नहीं है?

गार्डनिंग के शौकीन लोगों के बीच आजकल किचन वेस्ट से 'काला सोना' यानी जैविक खाद बनाने का ट्रेंड बहुत तेजी से बढ़ रहा है। आइए, हर साल 5 जून को मनाए जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर जानते हैं कि आप घर बैठे अपने रोजमर्रा के कचरे को कैसे इस बेशकीमती 'काले सोने' में बदल सकते हैं।

'काला सोना' आखिर है क्या?

काले सोने से हमारा मतलब उस उच्च गुणवत्ता वाली प्राकृतिक खाद से है, जो हमारे किचन के गीले कचरे के प्राकृतिक रूप से सड़ने से बनती है। यह खाद नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियम जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होती है और पौधों की ग्रोथ के लिए किसी जादू की तरह काम करती है। इसे इस्तेमाल करने के बाद आपको बाज़ार से महंगे केमिकल वाले फर्टिलाइजर खरीदने की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।

घर पर 'काला सोना' बनाने का सबसे आसान तरीका

घर पर खाद बनाना कोई रॉकेट साइंस नहीं है। आप इन आसान स्टेप्स को फॉलो करके इसे बेहद आसानी से तैयार कर सकते हैः

कोई भी पुराना मिट्टी का मटका या प्लास्टिक की बाल्टी लें। हवा आने-जाने के लिए इसके चारों तरफ और नीचे कुछ छोटे छेद जरूर कर लें।

सबसे नीचे सूखी पत्तियां, अखबार के टुकड़े या थोड़ी-सी सूखी मिट्टी की एक परत बिछाएं।

अब इसमें सब्जियों और फलों के छिलके, बची हुई चायपत्ती और अंडे के छिलके डालें।

किचन वेस्ट डालने के बाद उसके ऊपर फिर से थोड़ी सूखी मिट्टी या पत्तियां डाल दें। इस 'सैंडविच तरीके' से खाद में बदबू नहीं आती और कीड़े भी नहीं पनपते।

मटके को बालकनी या छत पर किसी छांव वाली जगह पर रख दें। इसमें हल्का पानी छिड़कते रहें ताकि नमी बनी रहे। हर 4-5 दिन में किसी डंडे या खुरपी से इसे ऊपर-नीचे करते रहें ताकि इसे ऑक्सीजन मिलती रहे।

लगभग 2 से 3 महीने में यह कचरा पूरी तरह से सड़कर गहरे काले रंग की भुरभुरी मिट्टी में बदल जाएगा। बस फिर लीजिए, आपके पौधों के लिए घर का बना 'काला सोना' बिल्कुल तैयार है।

सिर्फ खाद ही नहीं, छिलकों से बनाएं 'बायो-एंजाइम'

अगर आपके घर में नींबू, संतरे या मौसमी जैसे खट्टे फलों के छिलके बच गए हैं, तो उनसे आप एक बेहतरीन बायो-एंजाइम बना सकते हैं। यह एक पूरी तरह से प्राकृतिक और केमिकल-फ्री क्लीनर है।

इसे बनाने की आसान विधि:

एक एयर-टाइट प्लास्टिक की बोतल लें।

इसमें 3 हिस्सा खट्टे फलों के छिलके, 1 हिस्सा गुड़ और 10 हिस्सा पानी मिला लें।

बोतल का ढक्कन कसकर बंद कर दें और इसे घर के किसी सुरक्षित कोने में रख दें।

शुरुआती एक महीने तक रोजाना एक बार बोतल का ढक्कन हल्का-सा खोलकर अंदर बनने वाली गैस को बाहर निकालें और वापस बंद कर दें।

ठीक 3 महीने बाद इस लिक्विड को छान लें।

आपका होममेड और नेचुरल बायो-एंजाइम तैयार है। इसे आप पानी में मिलाकर घर का फर्श पोंछने के लिए, बाथरूम साफ करने के लिए, या पौधों पर ऑर्गेनिक कीटनाशक के रूप में स्प्रे करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

इसलिए, कचरे के डिब्बे में सब्जियों के छिलके डालने से पहले एक बार जरूर सोचें। आपकी थोड़ी-सी समझदारी और एक छोटी सी कोशिश न सिर्फ हमारे पर्यावरण को साफ रखने में मदद कर सकती है, बल्कि आपके गार्डन को भी हमेशा हरा-भरा रख सकती है।

आरबीआई गवर्नर ने दिए बड़े संकेत, महंगाई बढ़ने का खतरा, घट सकती है जीडीपी

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने वित्त वर्ष 2026-27 (FY27) के लिए देश की आर्थिक विकास दर (GDP Growth) के अनुमान को घटा दिया है। पहले RBI को उम्मीद थी कि भारतीय अर्थव्यवस्था 6। 9 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी, लेकिन अब इस अनुमान को घटाकर 6। 6 प्रतिशत कर दिया गया है। इसके अलावा RBI ने खुदरा महंगाई दर 5.1% रहने का अनुमान जताया है।

RBI का कहना है कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें, सप्लाई चेन में रुकावटें और मौसम से जुड़ी अनिश्चितताएं भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए जोखिम पैदा कर रही हैं। हालांकि केंद्रीय बैंक ने रेपो रेट को 5.25 प्रतिशत पर ही बरकरार रखा है।

RBI गवर्नर संजय मल्होत्रा ने मौद्रिक नीति समिति (MPC) के फैसले की घोषणा करते हुए कहा कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था अब तक मजबूत बनी हुई है। निजी खपत, निवेश, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर और सेवा निर्यात ने अर्थव्यवस्था को सहारा दिया है। RBI के नए अनुमान के अनुसार FY27 की पहली तिमाही में GDP ग्रोथ 6.6 प्रतिशत, दूसरी तिमाही में 6.3 प्रतिशत, तीसरी तिमाही में 6। 5 प्रतिशत और चौथी तिमाही में 6.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

मौसम भी बना बड़ी चिंता

RBI ने केवल वैश्विक हालात ही नहीं, बल्कि मौसम को भी बड़ी चिंता बताया है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि सामान्य से कम मानसून और एल नीनो (El Nino) जैसी स्थितियां कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकती हैं। भारत की अर्थव्यवस्था में मानसून की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अच्छी बारिश होने पर खेती बेहतर होती है, ग्रामीण इलाकों में मांग बढ़ती है और खाद्य महंगाई नियंत्रण में रहती है। वहीं कमजोर मानसून फसलों को नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं। हालांकि RBI का कहना है कि देश में पर्याप्त खाद्यान्न भंडार और जलाशयों में पर्याप्त पानी मौजूद है, जिससे कुछ हद तक राहत मिल सकती है।

कच्चा तेल बना सबसे बड़ा खतरा

अर्थशास्त्रियों का मानना है कि भारत की अर्थव्यवस्था के सामने सबसे बड़ा जोखिम कच्चे तेल की कीमतों में तेजी है। भारत अपनी जरूरत का 85 प्रतिशत से अधिक कच्चा तेल विदेशों से आयात करता है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होने का सीधा असर भारत पर पड़ता है।

RBI ने बढ़ाया महंगाई का अनुमान

इसके अलावा RBI ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए महंगाई के अनुमान को बढ़ा दिया है। इसकी वजह खाद्य पदार्थों की कीमतों में तेज बढ़ोतरी और पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच खुदरा महंगाई दर में आया उछाल है। वैश्विक अनिश्चितताओं को देखते हुए RBI ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित महंगाई दर 5.1% रहने का अनुमान लगाया है। इससे पहले अप्रैल में जारी नीति समीक्षा में महंगाई दर 4.6% रहने का अनुमान लगाया गया था। यानी केंद्रीय बैंक ने अपने महंगाई अनुमान में 0.5 प्रतिशत अंक की बढ़ोतरी की है।

पेंशनर्स के लिए बड़ा अलर्ट! आईटीआर -1, आईटीआर-2, आईटीआर-3 या आईटीआर-4, कौन-सा फॉर्म भरना है सही?

AY 2026–27 के लिए आईटीआर फाइल करते समय वरिष्ठ नागरिकों को सही फॉर्म चुनना बेहद जरूरी है। आईटीआर का चयन उम्र नहीं, बल्कि आय के स्रोत पर निर्भर करता है। गलत फॉर्म भरने पर नोटिस, देरी और अनुपालन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

अगर आप वरिष्ठ नागरिक (Senior Citizen) हैं और आकलन वर्ष 2026-27 (AY 2026-27) के लिए आयकर रिटर्न (आईटीआर) भरने की तैयारी कर रहे हैं, तो आपके मन में एक सवाल जरूर आ सकता है—आईटीआर-1, आईटीआर-2, आईटीआर-3 और आईटीआर-4 में से कौन-सा फॉर्म आपके लिए सही रहेगा?

आईटीआर फाइलिंग सीजन शुरू हो चुका है। ऐसे में यह समझना जरूरी है कि सही आईटीआर फॉर्म का चयन आपकी उम्र के आधार पर नहीं, बल्कि आपकी आय के स्रोत और आय की प्रकृति के आधार पर होता है। गलत फॉर्म चुनने पर रिटर्न डिफेक्टिव माना जा सकता है, जिससे नोटिस, देरी या अन्य अनुपालन संबंधी समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए कौन-सा आईटीआर फॉर्म लागू होता है?

आईटीआर-1 (सहज)

यह फॉर्म उन निवासी व्यक्तियों के लिए है जिनकी कुल आय 50 लाख रुपये तक है और आय का स्रोत वेतन, पेंशन, अधिकतम दो मकान तथा ब्याज जैसी अन्य आय है। इसके अलावा 5,000 रुपये तक कृषि आय और सूचीबद्ध शेयरों या इक्विटी म्यूचुअल फंड से 1। 25 लाख रुपये तक का दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ (LTCG) भी इसमें शामिल किया जा सकता है।

आईटीआर-2

यदि किसी वरिष्ठ नागरिक की आय में पूंजीगत लाभ (Capital Gains), दो से अधिक मकान, विदेशी संपत्ति, विदेशी आय, 5,000 रुपये से अधिक कृषि आय, गैर-सूचीबद्ध शेयर या कंपनी में निदेशक पद शामिल है, तो उसे आईटीआर-2 भरना होगा।

आईटीआर-3

यदि रिटायरमेंट के बाद भी कोई व्यक्ति कंसल्टेंसी, फ्रीलांसिंग, प्रोफेशनल प्रैक्टिस या व्यवसाय से आय कमा रहा है, तो उसे आईटीआर-3 दाखिल करना पड़ सकता है।

आईटीआर-4 (सुगम)

यह फॉर्म उन करदाताओं के लिए है जो अनुमानित कराधान योजना (Presumptive Taxation Scheme) का विकल्प चुनते हैं और जिनकी कुल आय 50 लाख रुपये तक है।

वरिष्ठ नागरिक अक्सर कौन-सी गलतियां करते हैं?

कर विशेषज्ञ सीए डॉ। सुरेश सुराना के अनुसार, कई वरिष्ठ नागरिक यह मान लेते हैं कि पेंशन मिलने के कारण उन पर हमेशा आईटीआर-1 ही लागू होगा। लेकिन यदि उन्हें म्यूचुअल फंड, शेयर बिक्री या संपत्ति से पूंजीगत लाभ हुआ है, तो आईटीआर-1 लागू नहीं हो सकता।

इसके अलावा कई रिटायर्ड लोग कंसल्टेंसी या प्रोफेशनल सेवाओं से आय अर्जित करते हैं, लेकिन फिर भी आईटीआर-1 या आईटीआर-2 भर देते हैं। ऐसे मामलों में आईटीआर-3 या आईटीआर-4 उपयुक्त हो सकता है।

विदेशी आय और संपत्ति को नजरअंदाज न करें

यदि किसी वरिष्ठ नागरिक को विदेश से पेंशन मिलती है, उसके पास विदेशी बैंक खाता है या विदेशी संपत्ति है, तो उसे आईटीआर-2 या आईटीआर-3 दाखिल करना पड़ सकता है। ऐसे मामलों में अतिरिक्त जानकारी देना भी अनिवार्य होता है।

Form 26AS, AIS और TIS जरूर जांचें

रिटर्न दाखिल करने से पहले Form 26AS, Annual Information Statement (AIS) और Taxpayer Information Summary (TIS) की जांच करना बेहद जरूरी है। वरिष्ठ नागरिकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पेंशन आय, बैंक एफडी का ब्याज, वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (SCSS) का ब्याज, डिविडेंड आय, म्यूचुअल फंड या शेयरों की बिक्री से हुए पूंजीगत लाभ और टीडीएस की जानकारी सही तरीके से दर्ज हो।

विशेषज्ञों का कहना है कि केवल AIS में दिखाई गई जानकारी पर भरोसा न करें। बैंक स्टेटमेंट, Form 16/16A और वास्तविक आय के आंकड़ों से मिलान करना जरूरी है, ताकि रिटर्न दाखिल करते समय किसी तरह की गलती न हो।

कुल मिलाकर, वरिष्ठ नागरिकों के लिए सही आईटीआर फॉर्म का चयन आय के स्रोतों पर निर्भर करता है। रिटर्न भरने से पहले अपनी आय की प्रकृति को अच्छी तरह समझ लेना भविष्य की परेशानियों से बचा सकता है।

परमाणु समझौता हुआ तो खामेनेई से मिल सकते हैं ट्रंप, बोले– सम्मान की बात होगी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अगर अमेरिका और ईरान के बीच चल रही बातचीत सफल रहती है और कोई समझौता हो जाता है, तो वह ईरान के सुप्रीम लीडर मुज्तबा खामेनेई से मिलने के लिए तैयार हैं। ट्रंप ने कहा कि ऐसी मुलाकात उनके लिए सम्मान की बात होगी। व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बात करते हुए ट्रंप ने कहा, 'मैं उनसे मिलने की कोशिश नहीं कर रहा हूं, लेकिन अगर मुलाकात होती है तो मुझे सम्मान महसूस होगा। अगर कोई समझौता हो जाता है तो उनसे मिलना संभव है और मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं है।' हालांकि ट्रंप ने यह भी कहा कि वह खामेनेई के पसंदीदा शख्स नहीं है।

ट्रंप ने कहा कि अगर मुलाकात होती है तो वह खामेनेई के साथ पूरे सम्मान से पेश आएंगे। उन्होंने कहा कि मुज्तबा खामेनेई को कई लोग एक पेशेवर नेता मानते हैं और कुछ लोगों के बीच उनकी अच्छी प्रतिष्ठा भी है। ट्रंप ने मजाकिया अंदाज में कहा कि कुछ लोग उनके बारे में बुरा बोलते हैं, लेकिन बहुत से लोग उनके बारे में अच्छा भी सोचते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उनके बारे में भी कई लोग गलत बातें करते हैं।

ट्रंप की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु कार्यक्रम को लेकर बातचीत चल रही है। यह मुद्दा दोनों देशों के रिश्तों में सबसे अहम बना हुआ है। इस दौरान ट्रंप ने ईरान के संवर्धित यूरेनियम भंडार को लेकर भी बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि अगर अमेरिका चाहे तो वह अभी ईरान के यूरेनियम भंडार पर नियंत्रण कर सकता है। ट्रंप के मुताबिक, ईरान अमेरिका को ऐसा करने से नहीं रोक पाएगा। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि फिलहाल ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है। ट्रंप ने दावा किया कि ईरान का संवर्धित यूरेनियम ऐसी जगह रखा गया है जहां वह पूरी तरह निगरानी में है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी एजेंसियां उस पर लगातार नजर रख रही हैं। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका के कैमरे वहां लगे हैं और हम उस सामग्री की निगरानी कर रहे हैं।

ट्रंप के बयान पर ईरान का जवाब

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने ट्रंप के उस बयान को खारिज कर दिया है, जिसमें ट्रंप ने कहा था कि वह मुज्तबा खामेनेई से मिलने के लिए तैयार हैं। अराघची ने कहा कि इस तरह की बातों को हकीकत और मौजूदा परिस्थितियों को ध्यान में रखकर देखना चाहिए। उन्होंने संकेत दिया कि फिलहाल ऐसी मुलाकात को लेकर कोई वास्तविक स्थिति नहीं है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा कारणों से ईरान की सुरक्षा एजेंसियों ने मुज्तबा खामेनेई की सार्वजनिक मौजूदगी को सीमित रखने की सलाह दी है। इसी वजह से वह पहले की तुलना में कम सार्वजनिक कार्यक्रमों में दिखाई देते हैं। अराघची ने कहा कि सरकार और देश के अधिकारियों का मुज्तबा खामेनेई के साथ लगातार संपर्क बना हुआ है।

अब शांति चुनिए... जेलेंस्की ने पुतिन को लिखी चिट्ठी, आमने-सामने बातचीत की पेशकश

वॉशिंगटन, एजेंसी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को एक खुला पत्र लिखकर सीधे मुलाकात और बातचीत का प्रस्ताव दिया है। जेलेंस्की का कहना है कि रूस-यूक्रेन युद्ध को खत्म करने का रास्ता दोनों नेताओं के बीच सीधी बातचीत से निकल सकता है। जेलेंस्की ने कहा कि खुफिया रिपोर्टों से पता चला है कि आप अब 2027 और 2028 तक युद्ध जारी रखने की योजना पर विचार कर रहे हैं। अब चुनाव आपका है। बहुत हो गया युद्ध। यूक्रेन ने इस युद्ध को समाप्त करने का प्रस्ताव रखा है। यह काम ईमानदारी से, गरिमा के साथ और इस गारंटी के साथ किया जाना चाहिए कि युद्ध दोबारा शुरू नहीं होगा।

1,800 से ज्यादा शब्दों वाले लेटर में जेलेंस्की ने कहा कि अमेरिका का ध्यान इस समय पूरी तरह ईरान पर है। ऐसे में यूक्रेन और रूस को यह इंतजार नहीं करना चाहिए कि यूरोप का युद्ध फिर से अमेरिका की प्राथमिकता बने। उन्होंने कहा कि शांति तभी संभव है जब दोनों देश सीधे बातचीत करें। जेलेंस्की ने प्रस्ताव दिया कि बातचीत के दौरान पूरी तरह युद्धविराम लागू किया जाए। हालांकि पुतिन इससे पहले ही इस मांग को खारिज कर चुके हैं।

जेलेंस्की ने पुतिन पर तंज भी कसा

जेलेंस्की ने लिखा कि 26 साल से सत्ता में रहने के कारण अब उम्र का असर पुतिन पर दिखाई देने लगा है। साथ ही उन्होंने हाल में रूस के अंदर हुए यूक्रेनी ड्रोन और मिसाइल हमलों का भी जिक्र किया। यूक्रेन इस युद्ध को आपके और हमारे बीच सीधी बातचीत के जरिए खत्म करना चाहता है। मैं आपसे मुलाकात का प्रस्ताव देता हूं। उन्होंने कहा कि यह बैठक स्विट्जरलैंड या तुर्किये जैसे किसी तटस्थ देश में हो सकती है।

क्रेमलिन ने पुष्टि की है कि उसे यह पत्र मिल गया है और पुतिन को इसके बारे में जानकारी दी जाएगी। हालांकि रूस ने कहा कि अगर जेलेंस्की मिलना चाहते हैं तो वह मॉस्को आ सकते हैं। सेंट पीटर्सबर्ग में पत्रकारों से बातचीत के दौरान पुतिन ने कहा कि वह यूक्रेन के साथ समझौता करने के लिए तैयार हैं, लेकिन इसके लिए दोनों पक्षों को कुछ समझौते करने होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि यूरोपीय संघ, जेलेंस्की को कुछ क्षेत्रों पर दावा छोड़ने के लिए मना सकता है।

रूस की डिमांड क्या है?

रूस लंबे समय से मांग कर रहा है कि यूक्रेन डोनेट्स्क, लुहांस्क, खेरसोन और जापोरिज्जिया क्षेत्रों से अपना दावा छोड़ दे और नाटो में शामिल होने की कोशिश बंद कर दे। लेकिन यूक्रेन इन शर्तों को मानने से इनकार करता है। उसका कहना है कि अगर उसने ऐसा किया तो रूस भविष्य में फिर हमला कर सकता है।

जेलेंस्की ने अपने लेटर में लिखा कि यूक्रेन हर दिन अपने लोगों को खो रहा है और हर मौत उसके लिए बेहद दर्दनाक है। उन्होंने यह भी दावा किया कि रूसी लोग भी अब युद्ध, यूक्रेनी ड्रोन हमलों, पेट्रोल की कमी और बढ़ती कीमतों से परेशान हो चुके हैं।

ट्रंप ने मुलाकात का समर्थन किया

वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी दोनों नेताओं की मुलाकात का समर्थन किया। ट्रंप ने कहा कि अगर पुतिन और जेलेंस्की मिलते हैं तो यह बहुत अच्छी बात होगी। उन्हें बातचीत करके इस युद्ध को खत्म करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका ने दोनों देशों को शांति के करीब लाने में अहम भूमिका निभाई है।

क्या अटक जाएगी ईरान-यूएस पीस डील? हिज्बुल्लाह और इजराइल की शर्त बनी वजह

वॉशिंगटन, एजेंसी। लेबनान में युद्ध रोकने की कोशिशों को बड़ा झटका लगा है। ईरान समर्थित हिज्बुल्लाह संगठन ने नए सीजफायर समझौते को मानने से इनकार कर दिया है। वहीं इजराइल ने साफ कर दिया है कि वह लेबनान से अपनी सेना नहीं हटाएगा और सैन्य कार्रवाई जारी रखेगा। इससे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की लेबनान में शांति बहाल करने और ईरान के साथ समझौता कराने की कोशिशें मुश्किल में पड़ गई हैं।

ईरान पहले ही कह चुका है कि अमेरिका के साथ किसी भी शांति समझौते के लिए लेबनान में युद्धविराम जरूरी शर्त है। हाल के दिनों में ईरान ने यह भी संकेत दिया है कि अगर इजराइल लेबनान पर हमले जारी रखता है तो वह सीधे इस संघर्ष में शामिल हो सकता है।

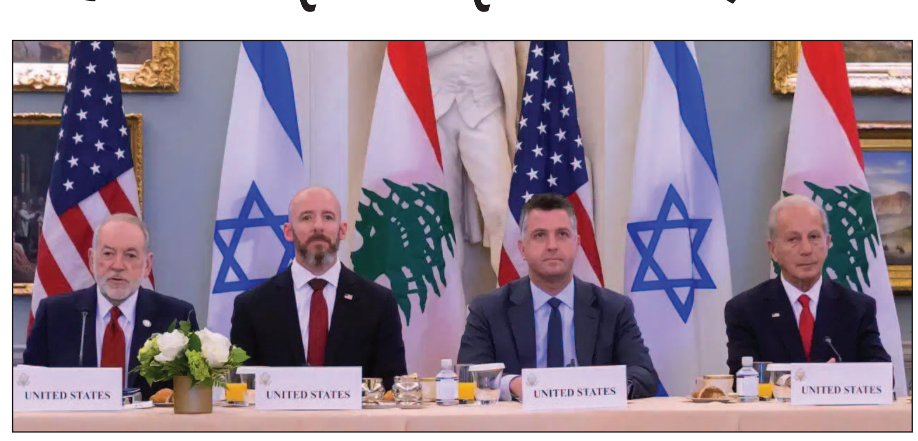

हालांकि हिज्बुल्लाह प्रमुख नईम कासिम ने अमेरिका की मध्यस्थता में तैयार किए गए युद्धविराम समझौते को खारिज कर दिया। यह समझौता इजराइल और लेबनान सरकार के बीच हुआ था, लेकिन हिज्बुल्लाह इस बातचीत का हिस्सा नहीं था। इसलिए उसने इसे मानने से इनकार कर दिया। इस पर इजराइल और लेबनान सरकार की ओर से तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। वॉशिंगटन में ट्रंप ने कहा कि लेबनान में शांति की दिशा में कुछ प्रगति हो रही है। उन्होंने कहा कि यह संघर्ष काफी लंबे समय से चल रहा है और लेबनान शांति का हकदार है। हालांकि जमीन पर हालात अलग हैं। इजराइल लगातार दक्षिणी लेबनान में हवाई और सैन्य हमले कर रहा है। इजराइली रक्षा मंत्री इजराइल काट्ज़ ने कहा कि उनकी सेना लेबनान से पीछे नहीं हटेगी और न ही अपने अभियान रोकेगी। इजराइल ने मार्च में ईरान के साथ बढ़े संघर्ष के दौरान लेबनान में सैन्य कार्रवाई शुरू की थी।

ईरान ने इजराइल के सामने डिमांड रखी

ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स की कुद्स फोर्स के कमांडर ने कहा कि कम से कम इजराइल को उन इलाकों तक पीछे हटना चाहिए, जहां उसकी सेना युद्ध शुरू होने से पहले तैनात थी। इस बीच, अमेरिका की मध्यस्थता से बने युद्धविराम के बावजूद लेबनान, गाजा, उत्तरी इजराइल और कुवैत में हमले जारी हैं। ट्रंप ने हाल ही में कहा था कि पूरी तरह शांति नहीं है, लेकिन पहले की तुलना में कम स्तर पर गोलीबारी हो रही है।

ईरानी ड्रोन ने कैसे ली कुवैत हवाई अड्डे पर एक भारतीय की जान? सामने आया वीडियो

तेहरान, एजेंसी। अमेरिकी हमले के जवाब में ईरान की सेना ने बुधवार को कुवैत के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर ड्रोन और मिसाइल हमला किया था, जिसका गुरुवार को सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। कुवैत के नागरिक उड्डन महानिदेशालय की ओर से जारी वीडियो में 4 एंगल की सीसीटीवी फुटेज दिखाई गई है। वीडियो में एक घातक ड्रोन तेजी से हवाई अड्डे की टर्मिनल की छत पर गिरता दिख रहा है। इसके बाद जोरदार धमाके के साथ आग का गोला उठ रहा है।

महानिदेशालय ने वीडियो साझा कर लिखा, '3 जून, 2026 को कुवैत अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल-1 को निशाना बनाकर किए गए क्रूर ईरानी ड्रोन हमले के शुरुआती क्षण। एक ऐसा हमला जिसके परिणामस्वरूप जान-माल का नुकसान हुआ, लोगों को गंभीर चोटें आईं और भारी भौतिक क्षति हुई।' हमले में एक भारतीय नागरिक की मौत हुई है, जिसकी पुष्टि कुवैत में स्थित भारतीय दूतावास ने की है। हमले में हवाई अड्डे के कर्मचारियों और यात्रियों सहित 63 लोग घायल हुए हैं।

ईरानी हमले के बाद हवाई अड्डे से कई उड़ानों को निलंबित कर दिया गया था, जबकि कई उड़ानों का मार्ग परिवर्तित किया गया था। कुवैत अधिकारियों ने बताया कि नुकसान के आकलन के बाद टर्मिनल-5 से जजीरा एयरवेज की सभी उड़ानें फिर से शुरू कर दी गई हैं। कुवैत सरकार ने हवाई अड्डे के आसपास सुरक्षा बढ़ा दी है। उसने कई ईरानी ड्रोन और मिसाइलों को हवा में ही नष्ट करने का दावा किया है।

सुप्रीम कोर्ट ने अदालतों में एआई के इस्तेमाल के लिए जारी किया ड्राफ्ट रेगुलेशन, 20 जून तक मांगा सुझाव

नई दिल्ली, एजेंसी। अदालतों में एआई के औपचारिक इस्तेमाल की ओर कदम बढ़ाया गया है। कोर्ट में एआई का कैसे इस्तेमाल होगा उसके क्या नियम होंगे, इसके बारे में नियम तैयार किए जाएंगे। क्या सुरक्षा उपाय और एहतियात बरते जाएंगे इस सबका खाका तैयार हो गया है। सुप्रीम कोर्ट ने रेगुलेशन्स फार यूज ऑफ एआई इन कोर्ट 2026 का ड्राफ्ट जारी कर सभी हितधारकों और आमजनता से सुझाव आमंत्रित किये हैं। जारी मसौदे में अदालतों में एआई के इस्तेमाल के रेगुलेशन का उद्देश्य न्यायिक प्रक्रिया में मानवीय प्रधानता, जवाबदेही, डेटा सुरक्षा और न्यायिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों पर आधारित है।

कोर्ट में एआई के इस्तेमाल के लिए जो ड्राफ्ट रेगुलेशन जारी किये गए हैं उनमें कहा गया है कि आर्टिफिशिल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल हर समय इंसानी फैसले और न्यायिक अधिकार के अधीन रहेगा।

ड्राफ्ट में क्या कहा गया है?

ड्राफ्ट के मुताबिक, कोर्ट की प्रक्रियाओं में इस्तेमाल होने वाले AI सिस्टम को इस तरह से डिजाइन, ट्रेन और लागू किया जाना चाहिए कि वे निष्पक्षता को बढ़ावा दें और भेदभाव से बचें। इसमें आगे कहा गया है कि ऐसा कोई भी AI सिस्टम लागू नहीं किया जाएगा जो नस्ल, धर्म, जाति, लिंग, विकलांगता, भाषा, आर्थिक स्थिति या संविधान या किसी मौजूदा कानून के तहत प्रतिबंधित किसी अन्य आधार पर भेदभाव को बढ़ावा दे, उसे बढ़ाए या पैदा करे। साथ ही, महिलाओं, बच्चों, विकलांग लोगों, हाशिए पर रहने वाले और अल्पसंख्यक समुदायों, आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों जैसे कमजोर समूहों के अधिकारों और हितों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाएगा।

हर एआई प्रणाली केवल एक सहायक की हैसियत से काम करेगी और किसी विधिवत नियुक्त न्यायिक अधिकारी यानी जज की जगह नहीं लेगी। कानून, तथ्यों और न्याय से संबंधित मामलों का निर्धारण करने का अंतिम अधिकार केवल न्यायाधीशों के पास होगा। कोई भी एआई सिस्टम किसी भी मामले में मानवीय हस्तक्षेप के बिना फैसले देने, सजा सुनाने का काम नहीं करेगा। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस पी।एस। नरसिम्हा की अध्यक्षता वाली इस कमिटी में जस्टिस संजीव सचदेवा, राजा विजयराघवन वी।, अनूप चितकारा और सूरज गोविंदराज सदस्य के तौर पर शामिल हैं। कमिटी ने अपनी सिफारिशों को अंतिम रूप देने से पहले सभी संबंधित पक्षों और आम जनता से राय और सुझाव मांगे हैं। ये सुझाव 20 जून तक जमा करने होंगे।

नीट मामले पर दिग्विजय सिंह ने की श्वेत पत्र की मांग, पीएम मोदी को लेटर में बताया कैसे वापस लाएं छात्रों का भरोसा

नई दिल्ली, एजेंसी। वरिष्ठ कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने नीट-UG पेपर लीक मामले को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है। उन्होंने सरकार से पिछले आठ सालों में NTA की परीक्षाओं में पेपर लीक या गड़बड़ियों की घटनाओं पर चिंता जताई है। राज्यसभा सांसद और Parliamentary Standing Committee on Education के चेयरमैन दिग्विजय सिंह ने PM नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर NEET-UG 2026 परीक्षा रद्द होने और पेपर लीक के मामलों पर श्वेत पत्र जारी करने की मांग की है।

दिग्विजय सिंह ने कहा कि ऐसे समय में जब लाखों छात्र भारी दबाव में हैं, सिस्टम में उनका भरोसा फिर से कायम करना बहुत जरूरी है। पीएम मोदी को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि मैं आपको एक बहुत जरूरी बात बताने के लिए लिख रहा हूं, जो पिछले कुछ हफ्ते में कई छात्रों ने मुझे बताई है। ऐसे समय में जब NEET-UG 2026 परीक्षा रद्द होने से लाखों छात्रों की मानसिक सेहत पर बुरा असर पड़ा है, उनके लिए एक बड़ी चिंता यह भी है कि पहले हुए पेपर लीक वगैरह की जांच कैसे हुई, इस बारे में कोई साफ जानकारी नहीं है।

पेपर लीक से जुड़े केसों का कोई consolidated public record नहीं है कि कितने केस हुए, CBI और दूसरी एजेंसियों ने क्या कार्रवाई की, किसे गिरफ्तार किया। ऑफिसियल जानकारी न होने से अफवाहें फैल रही हैं।

NEET-UG 2024 लीक का उदाहरण

हजारीबाग में हुए NEET-UG 2024 पेपर लीक का मुख्य आरोपी संजीव कुमार उर्फ मुखिया कथित तौर पर जमानत पर बाहर है।

UGC-NET 2024 भी रद्द हुआ था। CBI ने उसकी क्लोजर रिपोर्ट फाइल करके कहा कि कोई गड़बड़ी नहीं हुई।

दिल्ली कोर्ट ने CBI से लिखित स्पष्टीकरण मांगा तो CBI ने और समय मांगा। इससे छात्रों में गलत संदेश जा रहा है।

मांग क्या है? छात्रों का प्रशासन पर भरोसा वापस लाने के लिए दिग्विजय सिंह ने सरकार से White Paper जारी करने की मांग की है। उसमें ये 2 चीजें होंः

पिछले 8 साल में NTA द्वारा कराई गई परीक्षाओं में हुए पेपर लीक/गड़बड़ियों की पूरी लिस्ट

हर परीक्षा में NTA और जांच एजेंसियों ने क्या कार्रवाई की, किसे गिरफ्तार किया – इसकी डिटेल

शिल्पा शिंदे को लेकर हिना खान ने फिर की क्रिप्टिक पोस्ट? प्रधानमंत्री से की अपील; लिखा- अपराधियों को छोड़...

यौन उत्पीड़न के झूठे आरोप लगाने की बात को स्वीकार करने के बाद शिल्पा शिंदे सुर्खियों में आ गई हैं। इस मामले में हिना खान उनके खिलाफ खड़ी नजर आ रही हैं। क्रिप्टिक पोस्ट के जरिए शिल्पा को जवाब दे रही हैं। वह अब तक दो क्रिप्टिक पोस्ट इस मामले पर कर चुकी हैं।

बीते दिनों टीवी एक्ट्रेस शिल्पा शिंदे ने कबूल किया किया उन्होंने प्रोड्यूसर संजय कोहली पर यौन उत्पीड़न का झूठ आरोप लगाया। इस बात पर उनकी खूब ट्रोलिंग हुई। साथ ही एक्ट्रेस हिना खान ने भी इस मामले पर नाराजगी जताते हुए एक क्रिप्टिक पोस्ट की, जिसका जवाब सोशल मीडिया पर शिल्पा शिंदे ने दिया। लेकिन हिना खान ने फिर एक क्रिप्टिक पोस्ट की, जिसमें वह शिल्पा शिंदे पर तंज कसती नजर आ रही हैं। जानिए, अपनी दूसरी क्रिप्टिक पोस्ट में हिना खान ने क्या लिखा है।

हिना खान ने गुरुवार देर रात एक इंस्टाग्राम स्टोरी लगाई जिसमें लिखा, 'भारत के माननीय प्रधानमंत्री, भारत के माननीय राष्ट्रपति और भारत के कानून मंत्री, कृपया उन सभी अपराधियों को रिहा कर दें, जिन्होंने अपराध करने के बाद अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। क्योंकि उनमें हिम्मत है, क्योंकि वे सच के साथ खड़े हैं। और इसलिए भी क्योंकि जब उन्होंने अपराध किया था, तब किसी ने उनका साथ नहीं दिया था।'

इससे पहले भी हिना खान ने एक क्रिप्टिक पोस्ट की जिसमें यौन उत्पीड़न के झूठे आरोप को लेकर दुख जताया था। हिना का कहना था कि ऐसा करने से उन लोगों की लड़ाई कमजोर पड़ती है, जो असल जिंदगी में उत्पीड़न का शिकार हो रहे हैं।

शिल्पा शिंदे ने भी किया हिना को टारगेट

हिना खान ने पहले जो क्रिप्टिक पोस्ट की थी, उस पर एक इंस्टाग्राम वीडियो के जरिए शिल्पा शिंदे ने जवाब दिया। यह वीडियो शिल्पा ने हिना खान की पहली क्रिप्टिक पोस्ट के बाद शेयर की थी। वह हिना को भी क्रिप्टिक अंदाज में कहती हैं, 'आपके पास अपनी बीमारियां हैं, पब्लिसिटी पाने के लिए। आप मुझे मत छेड़िए।' बता दें कि हिना खान को कैंसर हुआ था, इस बारे में उन्होंने खुलकर बात की थी।

क्या था शिल्पा शिंदे का पूरा मामला?

टीवी एक्ट्रेस शिल्पा शिंदे ने हाल ही में एक चौंकाने वाला खुलासा किया था। उन्होंने भारती सिंह के पॉडकास्ट में बताया कि सीरियल 'भाबीजी घर पर हैं' के प्रोड्यूसर संजय कोहली के खिलाफ झूठा यौन उत्पीड़न का केस दर्ज कराया था। लेकिन बाद में मामला सुलझ गया था। इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर शिल्पा की खूब ट्रोलिंग हुई, टीवी इंडस्ट्री से हिना खान भी उनके खिलाफ बातें कर रही हैं।

एनिमेटेड सीरीज बाहुबली–क्राउन ऑफ ब्लड का ट्रेलर हुआ रिलीज, अनदेखी कहानियों का होगा खुलासा

साउथ की ब्लॉकबस्टर फिल्म बाहुबली ने इउंटरनेशनल लेवल पर इतिहास रचा था। इस फिल्म की कहानी को लेकर आज भी दर्शकों में रोमांच कायम है। वहीं पहले भाग की रिलीज के बाद एक इंटरनेशनल सवाल बन गया था कि कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा ? फिल्म के दूसरे भाग को भी दर्शकों ने काफी पसंद किया था। अब ओटीटी पर बाहुबली अलग अवतार में आने वाली है। एसएस राजामौली की ये फिल्म अब एक एनिमेटेड सीरीज में रिलीज होगी। इसका नाम बाहुबलीः क्राउन ऑफ ब्लड रखा गया है। शो का ट्रेलर लॉन्च किया गया है। इसे मेकर्स फिल्म का प्रीक्वल बता रहे हैं।

माहिष्मती साम्राज्य पर आधारित ये सीरीज जल्द ही ओटीटी प्लैटफॉर्म हॉटस्टार पर आने वाली है। इसका ट्रेलर रिलीज हो चुका है। नया एनिमेटेड प्रोजेक्ट फिल्म फ्रेंचाइजी का प्रीक्वल है। एक बयान के अनुसार, बाहुबलीः क्राउन ऑफ ब्लड, एक ऐसी कहानी है जहां बाहुबली और भल्लालदेव महिष्मति के महान साम्राज्य को बचाने के लिए साथ लड़ते हैं। दोनों भाई अपनी खटास भूलकर रक्तदेव नाम के रहस्यमय सरदार के खिलाफ सिंहासन की रक्षा के लिए हाथ मिलाते हैं। सीरीज देखकर दर्शक एक्साइटमेंट से भर गए हैं।

फिल्म में प्रभास, राणा दग्गुबाती, अनुष्का शेट्टी और तमन्ना भाटिया ने अभिनय किया था। एनिमेटेड सीरीज में भी किरदार हूबहू इनके चेहरे से मिले-जुले बनाए गए हैं। हमें प्रभास और राणा दग्गुबाती की झलक देखने को मिलती है।पावर-पैक एक्शन सीरीज़ 17 मई 2024 से डिज़्नी+ हॉटस्टार पर स्ट्रीम होने वाली है।

बाहुबलीः क्राउन ऑफ ब्लड के निर्माता राजामौली ने कहा, बाहुबली की दुनिया बहुत विशाल है, और फिल्म फ्रेंचाइजी इसका सटीक परिचय थी। यह कहानी पहली बार बाहुबली और भल्लालदेव के एक काले रहस्य को उजागर करेगी क्योंकि दोनों भाइयों ने मिलकर माहिष्मती को बचाया था। हम बाहुबली के प्रशंसकों के लिए इस नए अध्याय को पेश करके और इस कहानी को एनिमेटेड प्रारूप में लाकर बेहद खुश हैं।

रणवीर सिंह के हाथ लगा बड़ा प्रोजेक्ट, साउथ इंडस्ट्री के ब्लॉकबस्टर डायरेक्टर प्रशांत वर्मा संग करेंगे राक्षस

रणवीर सिंह के पास कुछ फिल्में हैं और वह इन दिनों अधिक फिल्में साइन कर रहें हैं और अधिक स्क्रिप्ट सुन रहें हैं। अपने नए प्रोजेक्ट्स के अलावा रणवीर, दीपिका पादुकोण की प्रेग्नेंसी की खबरों और अपने वायरल डीपफेक वीडियो को लेकर भी सुर्खियों में हैं। बता दें कि ये बॉलीवुड कपल अपने पहले बच्चे की उम्मीद कर रहें हैं। जबकि रणवीर अपने ब्रांड शूट और अन्य कार्यों में बिजी हैं। अब एक फेमस साउथ इंडस्ट्री फिल्म डायरेक्टर के साथ राक्षस नामक एक नई फिल्म साइन करने की खबर सामने आई है।

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि रणवीर सिंह भारतीय पौराणिक कथाओं पर आधारित एक फिल्म के लिए हनुमैन फेम प्रशांत वर्मा के साथ बातचीत कर रहें हैं। फ़ल्मि पर चर्चा तब चल रही थी जब वह नए प्रोजेक्ट, राक्षस पर काम शुरू करने के लिए लोकप्रिय स्टूडियोज़ को लाने की कोशिश कर रहे थे। नई रिपोर्टों में कहा गया कि उन्हें पुष्पा, पुष्पा 2, उप्पेना, सरकारू वारी पाटा, कुशी और कई अन्य फिल्मों के लिए फेमस माइथ्री मूवी मेकर्स से समर्थन मिला है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि फिल्म राक्षस प्रशांत सिनेमाई ब्रह्मांड से संबंधित है। निर्देशक कई पात्रों को पेश करने और उन सभी को एक अंतिम फिल्म में एक साथ लाने की योजना बना रहें हैं। बताया गया कि राक्षस की स्क्रिप्टिंग और विज़ुअलाइज़ेशन पहले ही पूरी हो चुकी है। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया कि रणवीर और प्रशांत ने हनुमान जयंती के अवसर पर राक्षसों के लिए पूजा भी की थी।

रणवीर सिंह के वर्कफ्रंट की बात करें तो फरहान अख्तर और एक्सेल एंटरटेनमेंट ने घोषणा की कि रणवीर कियारा आडवाणी के साथ डॉन 3 के लिए शाहरुख खान की जगह लेंगे। हाल ही में खबरें सामने आई कि फरहान ने इस फिल्म को कुछ समय के लिए ठंडे बस्ते में डाल दिया है। रिपोर्ट्स की मानें तो उनके पास एस शंकर की एक फिल्म है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह अन्नियन की रीमेक है। माना जाता है कि वह शक्तिमान पर एक फिल्म के लिए बातचीत कर रहें हैं। उनकी अगली फिल्म रोहित शेट्टी के साथ सिंघम अगेन है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित ।
शाखा कार्यालयः S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website : aryavartkranti.com
*सम्पादकः प्रभात पांडेय सम्पर्कः 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com